बेरोजगार प्रकाशन

चंदा - रु ...

म.प्र.की जनजातियाँ व विरासत, लोक संस्कृति एवं साहित्य

MPPSC UNIT - 10

Highlights

- Short & Sweet
- Exam oriented
- Diagram Presantations
- Map Presantations
- Authentic Facts
- Expert tips

बेरोजगार प्रकाशन

लेखक - रत्नेश रमेश पटेल

मुख्य विषयवस्तु

1.	**जनजातियाँ : परिचय और संवैधानिक प्रावधान** ⇒ भारत में जनजातियाँ ⇒ भारत में जनजातियों का भौगोलिक वितरण ⇒ भारत में जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान ⇒ म. प्र. की जनजातियाँ और जनगणना-2011 ⇒ पंचायत उपबंध(अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम(पेसा), 1996 ⇒ वन अधिकार अधिनियम(FRA), 2006	1-10
2.	**राष्ट्रीय व म.प्र. अनुसूचित जनजाति आयोग** ⇒ राष्ट्रीय व म.प्र. अनुसूचित जनजाति आयोग ⇒ म.प्र. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग	11-14
3.	**म.प्र. की प्रमुख जनजातियाँ और उनकी संस्कृति** ⇒ भील जनजाति ⇒ गोंड जनजाति ⇒ कोल जनजाति ⇒ कोरकू जनजाति ⇒ सहरिया जनजाति ⇒ बैगा जनजाति ⇒ भारिया जनजाति ⇒ अन्य जनजाति ⇒ मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजाति लोकनृत्य : पुनरावलोकन ⇒ मध्य प्रदेश के जनजाति प्रमुख लोकगीत : पुनरावलोकन ⇒ मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजाति पर्व और त्यौहार : पुनरावलोकन	15-46
4.	**म.प्र. की विशेष पिछड़ी जनजातियाँ एवं घुमन्तू जातियाँ** ⇒ म.प्र. की विशेष पिछड़ी जनजातियाँ (PVTGs) ⇒ विशेष पिछड़ी जनजाति विकास अभिकरण ⇒ बैगा, भारिया एवं सहरिया प्राधिकरण ⇒ विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियाँ/जातियाँ ☞ विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति विभाग'	47-57

	☞ मध्यप्रदेश राज्य विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति अभिकरण ☞ विमुक्त घुमक्कघड़ एवं अर्द्धघुमक्कवड़ जनजातियों की सूची ☞ विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों/जातियों का विवरण ☞ विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों/जातियों से सम्बंधित योजनाएँ	
5.	म.प्र. की जनजातियों का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान	58-61
6.	मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व ⇒ मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजातीय कलाकार ⇒ मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजातीय राजनेता	62-64
7.	म.प्र. में जनजातियों के प्रमुख संस्थान, संग्रहालय, प्रकाशन ⇒ म.प्र. में जनजातियों के प्रमुख संस्थान ☞ आदिम जातीय अनुसंधान और विकास संस्थान ☞ मप्र आदिवासी वित्त एवं विकास निगम ☞ उद्यमी विकास संस्थान ☞ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय आदिवासी विश्वविद्यालय ☞ मध्यप्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (MAPCET) ☞ कोल जनजाति अभिकरण ☞ मप्र जनजातीय कल्याण आवासीय एवं आश्रम शैक्षणिक संस्थान सोसायटी (एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय) ⇒ म.प्र. में जनजातियों के प्रमुख संग्रहालय ☞ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय ☞ रानी दुर्गावती संग्रहालय ☞ बादलभोई आदिवासी संग्रहालय ☞ जनजातीय संग्रहालय ☞ आदिवर्त आदिवासी और लोक कला संग्रहालय ⇒ म.प्र. में जनजातियों के प्रमुख प्रकाशन ☞ वन्या प्रकाशन ☞ आदिम जातीय अनुसंधान और विकास संस्थान द्वारा प्रकाशन	65-73
8.	म. प्र. की जनजातियों के लिए योजनाएँ/कार्यक्रम	74-86

9.	**मध्य प्रदेश का सांस्कृतिक परिदृश्य** ⇒ मध्यप्रदेश के लोक नृत्य ⇒ मध्यप्रदेश के नाटक ⇒ मध्य प्रदेश के लोक गीत ⇒ मध्य प्रदेश की लोक चित्रकला ⇒ मध्य प्रदेश के उत्सव एवं समारोह ⇒ मध्यप्रदेश के मेले ⇒ मध्य प्रदेश की वास्तुकला ⇒ मध्यप्रदेश की बोलियाँ	87-100
10.	**मध्य प्रदेश में सांस्कृतिक संस्थान अकादमियां, पुरस्कार-सम्मान और संग्रहालय** ⇒ सांस्कृतिक संस्थान और अकादमियाँ ⇒ मध्य प्रदेश के संग्रहालय ⇒ मध्यप्रदेश के पुरस्कार और सम्मान	101-104
11.	म.प्र. का लोक साहित्य/साहित्यकार	105-108
	विषयवस्तु पर आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न	109-134

आकर्षक विषयवस्तु

जनजातीय सलाहकार परिषद्	4	सिंडोली प्रथा/पर्व	29
मध्यप्रदेश में पेसा अधिनियम	8	प्रमुख कोरकू वाद्य	30
अनुसूचित क्षेत्र	14	झगड़ा विवाह/नाता प्रथा	32
म.प्र. की सबसे बड़ी जनजातियाँ	15	बिंझवार जनजाति	32
दापा-प्रथा	17	अगरिया जनजाति	35
हलमा परंपरा	19	भिम्मा जनजाति	35
घोटुल प्रथा	21	पोडा प्रथा	36
खैरवार जनजाति	21	बंजारा जनजाति	37
पनिका जनजाति	26	पारीधि जनजाति	37

ओरांव / उराँव जनजाति	37	लल्लनटॉप तथ्य	49
मँगनी विवाह	39	विमुक्त, घुमक्कड़(खानाबदोश) और अर्द्ध-घुमंतू जनजाति	50
पातालकोट	48	विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों/जातियों के लिए संचालित छात्रावास/आश्रम/सामुदायिक कल्याण केन्द्र	57

सम्पूर्ण UNIT NOTES उपलब्ध हैं

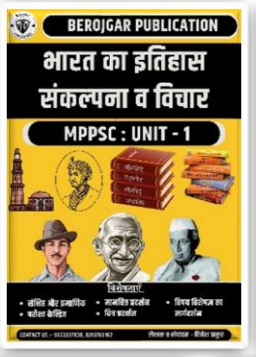

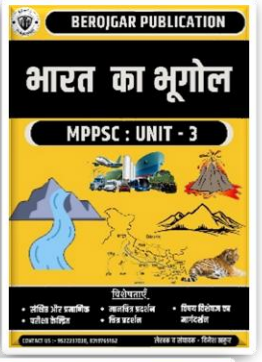

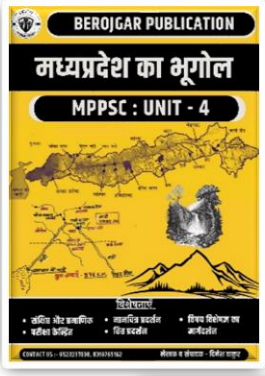

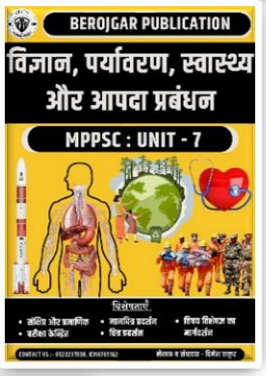

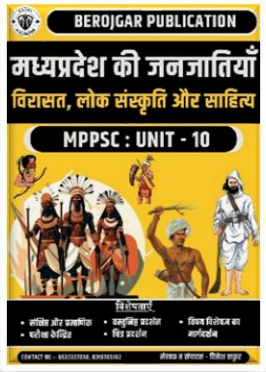

1 जनजातियाँ : परिचय और संवैधानिक प्रावधान

भारत में जनजातियाँ

→ 'जनजाति' शब्द लैटिन शब्द "TRIBUS" से लिया है।

→ आदिवासी में आदि शब्द का अर्थ है "पहले", "मूल" या "प्राचीन काल से", और वासी शब्द का अर्थ है "रहने वाला", "निवासी" और "बाशिंदा"।

→ एक जनजाति के पास एक अलग बोली और अलग सांस्कृतिक लक्षण होते हैं।

→ **भारत में जनजातीय लोगों को विभिन्न नामों से जाना जाता है**- जैसे 'आदिवासी' (मूल निवासी), 'अनुसूचित जनजाति', 'जनजाति', 'जनजति' (लोक समुदाय), 'गिरिजन' (पहाड़ी निवासी), 'वनवासी', 'वनजति', आदिमजाति, 'पहाड़ी जनजाति' (पर्वतीय निवासी) और स्वदेशी।

→ भारत के जनजातीय लोगों को भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जनजाति' कहा जाता है।

→ पंजाब, हरियाणा और केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़, दिल्ली और पुदुचेरी में कोई भी जनजाति नहीं है।

→ **2011 की जनगणना के अनुसार,**

- अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या – 10,42,81,034(8.6 प्रतिशत)
- 2001 से 2011 तक जनसंख्या वृद्धि - 8.2 प्रतिशत से बढ़कर 8.6 प्रतिशत
- दशकीय वृद्धि दर - 23.66 प्रतिशत
- लिंगानुपात – 990

→ **भारत में सबसे बड़े आदिवासी समूह** – भील > गोंड > संथाल > मीणा (2011 की जनगणना के अनुसार)

→ **अनुसूचित जनजाति का सबसे बड़ा केंद्र पूर्वी मध्य और पश्चिमी क्षेत्र है, जिसके तहत निम्न राज्य आते हैं**-

1.मध्य प्रदेश (14.69%), 2.महाराष्ट्र (10.08%), 3.उड़ीसा (9.2%), 4.राजस्थान (8.86:), 5.गुजरात (8.55%), 6.झारखंड (8.29%), 7.छत्तीसगढ़ (7.5%),

→ आदिवासी समुदायों की सबसे बड़ी संख्या (62) **उड़ीसा राज्य** में है।(जनगणना 2011)

→ **भारत में जनजातियाँ चार मानवी जातियों से सम्बंधित हैं**-

- **नेग्रिटो** – इन्हें अंडमान और निकोबार में ओंगे, ग्रेट अंडमानी, सेंटलिज और जारवा और केरल में कादर, इरुला और पनियन्स के रूप में जाना जाता है।
- **मोंगोलोइड्स** - असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में पाए जाते हैं।
- **मेडिटेरेरियन** - मेडिटेरीरियन जनजातीय आबादी का बड़ा समूह हैं और इन्हे हम द्रविड़ कहते हैं। ये छोटानागपुर पठार, राजमहल पहाड़ी क्षेत्र, अरावली पर्वतमाला, मध्य विंध्याचल, दक्कन पठार क्षेत्र और नीलगिरी पहाड़ियों में पाई जाती हैं।
- **प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉइड** - भारतीय आबादी के सबसे पुराने लोग, छोटा नागपुर, मध्य भारत और दक्षिण भारत पाए जाते हैं। जैसे - ओरांव या उरांव, खोंड और गोंड।

ज्ञानधारा 1.0
- नियमित तय घंटे पढ़ाई।
- नया सीखना/समझना।
- हर टॉपिक को कांसेप्टवाइज समझें।
- प्रश्न पूछने में कभी संकोच न करें।
- मॉक टेस्ट/मॉडल पेपर सॉल्व करना।

Con - 7470351334

→ **छठी अनुसूची** - चार पूर्वोत्तर राज्यों असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम में जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित है।

→ **अनुच्छेद 338(क)** – इसके तहत 2003 के 89वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा 2004 से राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग अस्तित्व में आया।

अनुच्छेद 366(25) में ST की परिभाषा

"ST" उन जनजातियों, आदिवासी समुदायों अथवा उन जनजातियों व समुदायों के कुछ हिस्सों या समूहों को संदर्भित करता है, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिये अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है।

जनजातीय सलाहकार परिषद

- ☺ **जनजातीय सलाहकार परिषद संवैधानिक निकाय है, जिन्हें पांचवीं अनुसूची के तहत स्थापित किया गया है।**
- ☺ **पांचवीं अनुसूची में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन के बारे में उल्लेख है।**
- ☺ **छठी अनुसूची चार उत्तर-पूर्व राज्यों मेघालय, असम, मिजोरम, त्रिपुरा में आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित है।**
- ☺ **अनुसूचित जनजातियों के कल्याण का ध्यान रखने के लिए जनजातीय सलाहकार परिषद में अधिकतम 20 सदस्य होते हैं।**

म. प्र. की जनजातियाँ और जनगणना-2011

→ **'जनजाति' से आशय** एक सामाजिक समूह से है जो दुनिया के किसी निश्चित भू-भाग पर निवास करता है जिसकी अपनी भाषा, संस्कृति और सामाजिक संगठन होता है।

→ "अनुसूचित जनजाति" शब्द का उल्लेख सबसे पहले "**भारत सरकार अधिनियम, 1935**" में किया गया था, बाद में इसे 1950 में भारत के संविधान में शामिल किया गया।

→ आदिवासी शब्द इस क्षेत्र के स्वदेशी लोगों पर भी लागू होता है।

→ आदिवासी शब्द का प्रयोग सबसे पहले **अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर** ने किया था, जिन्हें ठक्कर बापा के नाम से जाना जाता है।

→ 2011 की जनगणना के अनुसार जनजातियों का प्रतिशत **मध्यप्रदेश में 21.1%** है।

→ लगभग 46 जनजातियां यहां निवास करती हैं।

→ इनकी उपजातियों को मिलाकर इनकी **कुल संख्या 90** है।

→ मध्यप्रदेश में लगभग **1.53 करोड़ जनसंख्या** इन जनजातियों की है, जो अब भी भारत में सर्वाधिक है।

→ विभिन्न जनजातियों के कलाकार अपनी जनजाति से जुड़ी कला और संस्कृति को देश-विदेश में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। **मध्यप्रदेश सरकार** भी इनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत है।

सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाले जिले

क्रमांक	नगर	जनसंख्या
1	धार	1222814
2	बड़वानी	962145
3	झाबुआ	891818
4	छिंदवाड़ा	769778
5	खरगोन	730169

न्यूनतम अनुसूचित जनजाति वाले जिले

क्रमांक	नगर	जनसंख्या
1	भिंड	6131
2	दतिया	15061
3	मुरैना	17030
4	मंदसौर	33092
5	शाजापुर	37836

सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति प्रतिशत वाले जिले

क्रमांक	नगर	प्रतिशत
1	अलीराजपुर	89.0
2	झाबुआ	87.0
3	बड़वानी	69.4
4	डिंडोरी	64.7
5	मंडला	57.7

न्यूनतम अनुसूचित जनजाति प्रतिशत वाले जिले

क्रमांक	नगर	प्रतिशत
1	भिंड	0.4
2	मुरैना	0.9
3	दतिया	1.9
4	मंदसौर/शाजापुर/उज्जैन	2.5
5	भोपाल	2.9

LISTEN!

- प्रस्तुत संस्करण में सभी आंकड़े और तथ्य सरकारी वेबसाइट, हिंदी ग्रन्थ अकादमी औरBA की पुस्तकों से लिया गया है। हमारा प्रयास रहा है कि हम उन सभी तथ्यों को शामिल करें जो परीक्षा में आ सकते हैं। परन्तु पुस्तक को भारी-भरकम बनाने की जगह हमने सटीकता पर ध्यान दिया है।
- नियमित टेस्ट के द्वारा अपनी UNIT 10 की तैयारी को और सटीकता से तैयार कर सकते हैं।
- आप पुराने पेपर को भी लगाते रहे जिससे तथ्यों की प्राथमिकता तय करने में आसानी होगी हैं। क्योंकि कई तथ्य केवल कांसेप्ट को समझने के लिए होते हैं जिन्हें परीक्षा के करीबी दिनों में छोड़ दिया जाता है।
- अनावश्यक तथ्यों को याद ना करें और प्राथमिकता के आधार पर महत्वपूर्ण बिन्दुओं को हाईलाइट करें।

Con. for more - 7470351334

मध्य प्रदेश की जनजातियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

→ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या **1,53,16,784** है जो राज्य की कुल जनसंख्या का **21.1 %** तथा देश की कुल जनजातीय जनसंख्या का **13.57%** है।

→ सबसे बड़ा आदिवासी समूह भील है जिसके बाद **गोंड और कोल** हैं।

→ अनुसूचित जनजाति की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर **25.2%** है।

→ अनुसूचित जनजाति में साक्षरता दर **50.6%** है, **परधान जनजाति (गोंड की उप-जनजाति) को सबसे साक्षर जनजाति** माना जाता है।

→ अनुसूचित जनजाति में **लिंगानुपात 975 महिला प्रति हजार पुरुष** है।

जनगणना-2011 में मध्य प्रदेश की जनजातियों की जनसंख्या

भील

→ मध्यप्रदेश की जनजाति जनसंख्या में भीलों की संख्या सर्वाधिक है।

→ मध्यप्रदेश में भीलों की संख्या **46,18,068** है।

→ मध्यप्रदेश की कुल जनजाति जनसंख्या का **37.7 प्रतिशत** है।

→ **भीलों की सर्वाधिक जनसंख्या** - धार(**12 लाख से अधिक**) में है।

→ **जिले** - बड़वानी, झाबुआ और खरगौन(**5 लाख से अधिक**)

गोंड

→ मध्यप्रदेश में गोंड की जनसंख्या **50.93 लाख** है।

→ यह प्रदेश की कुल जनजातीय जनसंख्या का **33.25%** है।

→ सर्वाधिक जनसंख्या छिन्दवाड़ा में **6.2 लाख** है।

बैगा

→ मध्यप्रदेश में बैगा जनजाति की जनसंख्या **4.15 लाख** है।

→ यह राज्य की कुल जनजातीय जनसंख्या का **2.71 प्रतिशत** है।

→ सबसे ज़्यादा जनसंख्या **मण्डला** में है।

सहरिया

→ मध्य प्रदेश में सहरिया जनजाति की जनसंख्या **33,213** है।

→ साल 2011 के लिए अनुमानित जनसंख्या **40,310** थी।

भारिया

→ **1981 की जनगणना** में पातालकोट की भारिया जनजाति को 'जंगलियों के भी जंगली' कहा गया था।

→ मध्य प्रदेश में इनकी संख्या **1,93,230** है।

→ पातालकोट में इनकी संख्या **4824** है जिसमें **2458 महिला** तथा **2366 पुरुष** है।

कोरकु

→ मध्यप्रदेश में कोरकुओं की कुल जनसंख्या **7,30,847** है।

→ यह प्रदेश की जनसंख्या में प्रतिशत **4.77** है।

कोल

→ यह मध्यप्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है।

→ 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में इनकी संख्या **11.67 लाख** हैं।

→ यह कुल जनजाति जनसंख्या का **7.6 प्रतिशत** है।

→ **पब्लिक वॉचडॉग :** ग्राम सभा को अपने गाँव की सीमा के भीतर **नशीले पदार्थों के निर्माण, परिवहन, बिक्री और खपत की निगरानी तथा निषेध करने की शक्तियाँ** प्राप्त होंगी।

मध्यप्रदेश में पेसा अधिनियम

- **पेसा अधिनियम, 1996 को मध्य प्रदेश में 15 नवंबर, 2022 को लागू किया गया था।**
- **यह एक्ट, आदिवासी समुदाय की पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था को मान्यता देता है।**
- **यह एक्ट, आदिवासी समुदायों को स्वशासन की अपनी प्रणालियों के ज़रिए स्वयं को शासित करने के अधिकार को मान्यता देता है।**
- **मध्य प्रदेश के बड़े आदिवासी नेता और झाबुआ से सांसद रहे दिलीप सिंह भूरिया की अध्यक्षता में समिति बनी थी, उसकी अनुशंसा पर ही यह मॉडल कानून बना था।**
- **यह बात अलग है कि 24 दिसंबर 1996 को पेसा कानून देश में लागू हुआ था लेकिन देश में सबसे अधिक आदिवासियों के घर यानी मध्य प्रदेश में कानून लागू करने में 27 साल लग गए।**
- **इससे पहले देश के 6 राज्यों हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र ने पेसा कानून बनाए गए हैं।**
- **यह मध्य प्रदेश के 89 जनजातीय ब्लॉक में लागू होगा। यह शहरों में नहीं बल्कि गांव में लागू होगा।**
- **ग्रामसभाओं में जनजातीय समुदाय के अलावा वहां रहने वाले अन्य लोग भी सदस्य रहेंगे।**

मध्यप्रदेश में पेसा अधिनियम से लाभ/महत्व

→ एक्ट के तहत अब **गांव की जमीन और वन क्षेत्र के नक्शा, खसरा, बी-1** आदि ग्राम सभा को **पटवारी** और **बीट गार्ड** हर साल उपलब्ध कराएंगे।

→ लोगों को रिकॉर्ड लेने के लिए बार-बार **तहसीलों के चक्कर नहीं** काटने पड़ेंगे।

→ यदि **राजस्व अभिलेखों** में कोई गलती पाई जाती है, तो ग्राम सभा को उसमें सुधार के लिए अपनी अनुशंसा भेजने का पूरा अधिकार होगा।

→ अधिसूचित क्षेत्रों में बिना **ग्राम सभा की सहमति** के किसी भी प्रोजेक्ट के लिए गांव की **जमीन का भू-अर्जन नहीं** किया जाएगा।

→ गैर-जनजातीय व्यक्ति या कोई भी अन्य व्यक्ति छल-कपट से, बहला-फुसलाकर, विवाह करके जनजातीय लोगों की **जमीन पर गलत तरीके से कब्जा करने नहीं** कर सकेगा।

→ फिर भी कोई **जमीन खरीदने की कोशिश** करे, तो **ग्राम सभा को हस्तक्षेप** करने का पूरा अधिकार होगा।

→ **ग्राम सभा** को कब्जा किए जाने या खरीदारी की बात पता चलती है, तो वह उस **भूमि का कब्जा** फिर से जनजातीय व्यक्ति को दिलवा सकेगी।

2 राष्ट्रीय व म.प्र. अनुसूचित जनजाति आयोग

राष्ट्रीय व म.प्र. अनुसूचित जनजाति आयोग

→ **1999** में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण एवं विकास के कार्यों को गति देने के लिये एक नये **जनजातीय मंत्रालय** की स्थापना की गयी।

→ यह महसूस किया गया कि अनुसूचित जनजातियों से संबंधित सभी योजनाओं में समन्वय स्थापित करने के लिये **जनजातीय कल्याण आयोग** का होना आवश्यक है। चूंकि **सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय**के लिए इस भूमिका को निभाना प्रशासनिक दृष्टि से संभव नहीं था।

→ इस प्रकार अनुसूचित जनजातियों के हितों की अधिक प्रभावी तरीके से रक्षा के लिये यह प्रस्ताव रखा गया कि **राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग एवं जनजाति आयोग का गठन**किया जाए। तत्पश्चात विभाजन कर दोनों के लिये पृथक्-पृथक् आयोगों की स्थापना की गयी।

→ इसकी स्थापना अंतत: **2003 के 89वें संविधान संशोधन अधिनियम**के द्वारा की गयी। इसके लिये संविधान के अनुच्छेद 338 में संशोधन किया गया तथा उसमें एक नया **अनुच्छेद 338-क** जोड़ा गया।

→ **वर्ष 2004 से राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग अस्तित्व**में आया।

परिचय

→ **राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST)** की स्थापना भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 338** में संशोधन करके और संविधान (89वाँ संशोधन) अधिनियम, 2003 द्वारा संविधान में एक नया **अनुच्छेद 338A** सम्मिलित कर की गई थी, अत: यह एक संवैधानिक निकाय है।

→ **अनुच्छेद 338A** अन्य बातों के साथ-साथ NCST को संविधान के तहत या किसी अन्य कानून के तहत या सरकार को किसी अन्य आदेश के तहत STs को प्रदान किये गए विभिन्न सुरक्षा उपायों के कार्यान्वयन की निगरानी करने और ऐसे सुरक्षा उपायों के कामकाज का मूल्यांकन करने की शक्ति प्रदान करता है।

संरचना

→ इस आयोग में **एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष और तीन पूर्णकालिक सदस्य (एक महिला सदस्य सहित)**शामिल हैं।

→ सदस्यों में **कम-से-कम एक सदस्य महिला** होनी चाहिये।

→ कार्यकारी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और NCST के सदस्यों का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से लेकर **तीन वर्ष** तक का होता है।

→ सदस्य दो से अधिक कार्यकाल के लिये नियुक्ति के पात्र नहीं होते हैं।

→ इस आयोग के अध्यक्ष को केंद्रीय **कैबिनेट मंत्री** तथा उपाध्यक्ष को **राज्य मंत्री** का दर्जा प्राप्त है, जबकि अन्य सदस्यों को भारत सरकार के **सचिव पद** का दर्जा दिया गया है।

→ इनकी **नियुक्ति** राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सीलबंद आदेश द्वारा की जाती है।

→ उनकी **सेवा शर्तें एवं कार्यकाल**भी राष्ट्रपति द्वारा ही निर्धारित किए जाते हैं।

→ नियमानुसार, इनका कार्यकाल **3 वर्ष** का होता है।

शक्तियां

आयोग को, अपने कृत्यों का पालन करते समय सिविल न्यायालय की शक्तियां प्राप्त होंगी

- → किसी व्यक्ति को हाजिर होने के लिए बाध्य करना और समन करना तथा शपथ पर उसकी परीक्षा करना;
- → किसी दस्तावेज का प्रकटीकरण और पेश किया जाना;
- → शपथ पर साक्ष्य ग्रहण करना;
- → किसी न्यायालय या कार्यालय से किसी लोक अभिलेख या उसकी प्रति की अध्यपेक्षा करना;
- → साक्षियों और दस्तावेजों की परीक्षा के लिए कमीशन जारी करना;
- → कोई अन्य विषय जिसे राज्य सरकार, नियम द्वारा अवधारित करें।

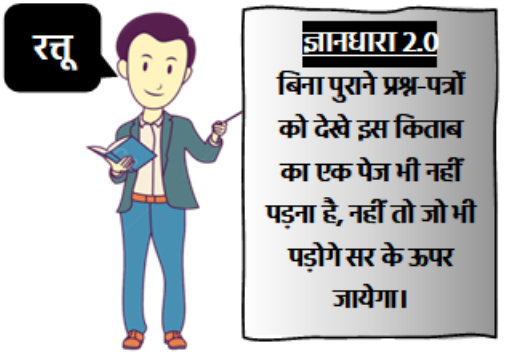

ज्ञानधारा 2.0

बिना पुराने प्रश्न-पत्रों को देखे इस किताब का एक पेज भी नहीं पड़ना है, नहीं तो जो भी पड़ोगे सर के ऊपर जायेगा।

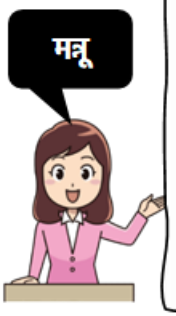

अनुसूचित क्षेत्र

- ☺ अनुच्छेद 244 (1) के मुताबिक, राष्ट्रपति को किसी भी क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित करने का अधिकार है।
- ☺ इन क्षेत्रों में केंद्र सरकार, अनुसूचित जनजातियों के सांस्कृतिक और आर्थिक हितों की रक्षा करती है।

SPONSERD BY :- DEEPTI SINGH ACADEMY

3 म.प्र. की प्रमुख जनजातियाँ और उनकी संस्कृति

परिचय

→ भारत में **सबसे ज्यादा आदिवासी** मध्य प्रदेश में है।
→ जो भारत की जनजातीय जनसंख्या का 14.64% है।
→ मध्यप्रदेश में कुल जनसंख्या में जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत 21.09 है।
→ एमपी में लगभग **46** प्रकार की जनजातियों (**24 प्रमुख जनजातियों सहित**) है।
→ प्रदेश में कुल **52 जिलों में 21 आदिवासी जिले** हैं।
  ☞ **6** पूर्ण रुप से जनजाति बहुल जिले
  ☞ **15** आंशिक जनजाति बहुल जिले
→ प्रदेश में **89** जनजाति विकास खंड हैं।
→ एमपी में की प्रमुख जनजातियाँ **भील, गोंड, कोल, कोरकू, सहरिया, भारिया, बैगा** आदि।
→ अन्य में **भिलाला, बारेला, सोर, पटेलिया, मवासी, पनिका, कंवर, हल्बी, मुंडा, खरिया** आदि हैं।
→ एमपी में इनकी **आबादी 1.53 करोड़** है।
→ सबसे अधिक जनसंख्या(46.18 लाख) **भीलों** की है जिसके बाद गोंड (43.57 लाख) है।
→ जनजातियों का **लिंगानुपात 975** है।(बालाघाट-1048)

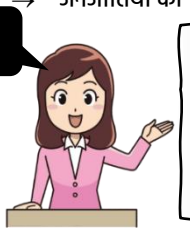

म.प्र. की सबसे बड़ी जनजातियाँ
1. भील (46.18 लाख)
2. गोंड (43.57 लाख)
3. कोल (11.67 लाख)

भील जनजाति

परिचय

→ **भारत का बहादुर "धनुष पुरुष** " कहा जाता है।
→ **मूल निवास** - ढोलका(राजस्थान, कुशलगढ़)
→ **राजवंश** - **विहिल वंश** । इस वंश का शासन मालवा, दक्षिण राजस्थान, गुजरात, ओडिशा, महाराष्ट्र में था।
→ **सम्बंधित जिले** - **धार, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, खंडवा, गुना** आदि जिलों में निवास करती है।
→ युवा भील **बाँसुरी** बजाने के शौकीन होते हैं।

प्रमुख पद

→ **गमेती** - गांव का मुखिया।
→ **भोपा** - झाड़-फूंक करने वाला।
→ **भगत** - सबसे पवित्र व्यक्ति।
→ **पुजारो** – वैद्य का काम करने वाला।

भोजन

→ **राबड़ी, गुड़भात्या** भीलों का मुख्य भोजन है।
→ **महुआ(मोहड़ा)** की शराब तथा **ताड़ का रस** मुख्य पेय है।
→ अनाज रखने की बाँस से बनी कोठी को **कनगी** कहते हैं।

निवास

→ घर **"कु**" मोहल्ला **"फल्या"** कहलाता है।
→ फल्यों से गाँव बनता है जिसे **पाल** कहते हैं। पाल का मुखिया **पालवी** कहलाता है।

इनकी कृषि को **दाहिया या चिमाता** कहते है।

लोकगीत

→ **सुवंटिया** - स्त्री द्वारा ।
→ **हमसीढ़ो**- स्त्री व पुरुष द्वारा।

नृत्य

→ **कहरवा** - स्त्री और पुरुष दोनों अलग अलग शैली में नाचते हैं। इसकी मुख्य ताल कहरवा ताल है ।
→ **गवरी(गौरी)** - पुरुषों के द्वारा, 'रक्षा बंधन' के अवसर किया जाता है।
→ **घूमर** - युवा लड़कियों द्वारा किया जाता है।

→ **लुगड़ा लाड़ी** – एक विवाह प्रथा है।

→ **नातरा विवाह** - विधवा विवाह है।

मेले

→ **बेणेश्वर मेला(डूंगरपुर)** – यह मेला माघ पूर्णिमा को **सोम-माही-जाखम** नदियों के संगम पर भरता है।(राजस्थान में दोनों)

→ **घोटिया अम्बा का मेला(बांसवाडा)** - **"भीलों का कुम्भ"** है।

मृत्यु संस्कार

→ **जलाने, गाड़ने और जलदाग** करने की प्रथा है।

→ जिनकी मृत्यु किसी बीमारी से होती है, उन्हें गाड़ा जाता है शेष का दाह संस्कार किया जाता है।

→ **टिंया** – सामूहिक मृत्यु भोज है।

→ **बारहवाँ** – केवल सम्पन्न लोगों द्वारा।

धार्मिक विश्वास और मान्यताएँ

→ **टोने-टोटके** - विभिन्न बीमारियों, अनावृष्टि, अतिवृष्टि अन्य संकटकालीन स्थितियों में टोने-टोटके किये जाते हैं। जैसे - नवजात शिशु और माँ के सिरहाने **एक तीर** रखा जाता है।

→ **तंत्र-मंत्र** – बड़वा(तांत्रिक) तंत्र-मंत्र से रोगी को रोग मुक्त करता है। कई प्रकार के मंत्र प्रचलित हैं। जैसे - बुखार उतारने, सिर दर्द निवारक, बिच्छू-सर्प जहर निवारक मंत्र आदि।

भीलों में कहावत ही है - 'जुग जैरी तो मुलक बैरी'
अर्थात् कड़वी जुबान से ही सारा संसार हमारा दुश्मन बन जाता है। कुछ न मिले, किन्तु मधुर वाणी मिले, यह पर्याप्त है।

प्रमुख प्रथाएं

→ **कट्टा** – मृत्युभोज की प्रथा ।

→ **केसरिनाथ के चढ़ी हुई केसर** – भील केसरिनाथ को चढ़ी हुई केसर का पानी पीकर कभी झूठ नहीं बोल सकता ।

→ **वढौतरा** – दापा प्रथा में वसूली गई राशि वढौतरा कहलाती है ।

दापा-प्रथा

→ झाबुआ में भील एवं भिलाला में प्रचलित दहेज की प्रथा है।

→ इसमें वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को दहेज दिया जाता है।

→ अक्टूबर, 2016 से इसको समाप्त करने हेतु साथीदार अभियान प्रारम्भ हुआ।

प्रमुख कलाकार

→ **पेमा फत्या** - भील जनजाति के प्रसिद्ध चित्रकार पेमा फत्या का जन्म झाबुआ में हुआ था।

→ **भूरी बाई** - भूरी बाई का जन्म झाबुआ के पिटोल गांव में हुआ। पिथौरा चित्रकला की चित्रकार हैं ।

क्रांतिकारी

→ **टंट्या भील** - मराठो की हार के बाद अंग्रेजी सत्ता से संघर्ष।

→ **खाज्या नायक** - भील जनजाति के प्रमुख क्रांतिकारी नेता खाज्या नायक का जन्म निमाड़ क्षेत्र के सांगली गांव में हुआ था।

→ **भीमा नायक** - 1857 के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी।

→ **वारती** - सामूहिक जाति भोज की देखरेख।

वस्त्र एवं आभूषण

→ संसार की सबसे अधिक **श्रृंगारप्रिय जनजाति** है।

→ भीली स्त्रियाँ विश्व की सबसे अधिक **गहना प्रिय स्त्रियाँ** हैं।

→ **अंगरखा** – स्त्रियों का वस्त्र हैं।

→ **सिंदूरी**- लाल रंग की साड़ी है।

→ **ठेपाडा**- पुरुषों द्वारा पहने जाने वाली तंग धोती है।

→ **अंगरुठी**- स्त्रियों की चोली।

गुदना कला

→ इनकी बोली में गोदना को "**गुदावणो**" कहते हैं।

→ गोदने वाली महिला को **गोदारिन** के नाम से जानते हैं।

→ **प्रमुख गुदना आकृतियाँ** - आम्बा, आम्बा मोर, कहावरी, छितारा आदि।

लोकनृत्य

→ **डोहिया नृत्य** - भगोरिया हाट में किया जाता है।

→ **गहर नृत्य** - होली के अवसर पर किया जाता है।

→ **डोहो** - मनौती वाला धार्मिक उत्सव है। डोहो में मिट्टी की मटकी होती है।

→ **गरबी** - दीपावली पर किया जाता है।

→ **वीरवाल्या** - श्रावणमास और नवरात्रि में किया जाता है।

→ **नेजा नृत्य** - होली के तीसरे दिन से स्त्री-पुरुषों द्वारा खम्भे पर नारियल बांधकर किया जाने वाला नृत्य है।

चित्रकला

→ **गोतरेज** - माँगलिक अवसरों पर घर की भीतर दीवार पर गरप, बैल, सर्प, आम्र वृक्ष का अलंकरण हैं।

→ **पिथौरा**

- ☞ पिथौरा कलाकार को **लखिंद्रा** कहते हैं।
- ☞ पिथौरा आदिवासी मन की कल्पनाओं और भावनाओं का दर्पण है।

आर्थिक जीवन

→ मूलतः ये लोग **कृषक** हैं। **मछली पकड़ना** भी इनका मुख्य व्यवसाय है।

→ पक्षियों का शिकार करना व जंगलों से जड़ी-बूटियाँ, कन्द-मूल फल, गोंद, बेर, महुंआ, सीताफल, लकड़ी आदि एकत्रित करना भी इनका प्रमुख व्यवसाय है।

→ भील जनजाति द्वारा मैदानी इलाकों में की जाने वाली खेती को **दजिया** और पहाड़ी इलाकों में की जाने वाली झूम कृषि को **चिमाता** के नाम से जाना जाता है।

हलमा परंपरा

हलमा भील समाज में एक मदद की परंपरा है।
जब कोई व्यक्ति या परिवार खुद पर आए संकट से उबर नहीं पाता है, तब उसकी मदद के लिए सभी ग्रामीण जुटते हैं।
हलमा की सबसे बड़ी खासियत है इसकी निस्वार्थ भावना और उदारता।

→ भील जनजाति द्वारा **'पुंजा दरियों'** का निर्माण किया जाता है।

→ **भील और भिलाला जनजाति** के लोग गुड़िया बनाते हैं। झाबुआ की गुड़िया बनाने की कला को **'आदिवासी गुड़िया हस्तशिल्प'** कहते हैं।

→ भील जनजाति का **नंदना प्रिंट** एक कीचड़ रोधी कपड़ा शिल्प है।

ज्ञानधारा 3.0

→ 1 पुस्तक 3 बार पढ़ो
- ☞ पहली, सरसरी नजर से;
- ☞ दूसरी, पुराने प्रश्न देखकर;
- ☞ तीसरी, बारीकी(गहन) से;

→ रिवीजन के फायदे
- ☞ जो सीखा है उसकी सीमाएँ पता चलती हैं, उन्हें पार करने का मौका मिलता है;
- ☞ तथ्यों, आंकड़ों, विषयों, और कार्यप्रणाली को याद रखने में मदद मिलती है;
- ☞ वस्तुतः आत्मविश्वास बढ़ता है;

Con. for more - 7470351334

- ☞ **प्रमुख कलाकार**- **दुर्गाबाई व्याम**, भज्जू सिंह श्याम, आनंद सिंह श्याम (डिंडोरी), जंगगढ़ सिंह श्याम आदि।
- ☞ दुर्गाबाई व्याम ने 2019 में **'डिगना कला माध्यम'** नाम से एक शिक्षा संस्था बनाई है।

→ **नोहडोरा कला**

- ☞ **दीवारों** पर मिट्टी से बना अलंकरण है।
- ☞ नोहडोरा, नया घर बनाते समय दीवारों पर गहन अलंकरण डालने को कहते हैं।
- ☞ **गीली दीवारों** पर बनाई जाती है।
- ☞ इसमें **पशु-पक्षी, फूल पत्तियां, पेड़-पौधे** आदि का चित्रण होता है।

भाषा और बोली

→ **गोंडी तथा डोरली** इनकी प्रमुख भाषाएँ हैं।

→ ये **द्रविड़ भाषा परिवार** से है।

→ गोंडी भाषा को गोंडी लिपि में **बालाघाट** के **भावसिंह मसराम** ने वर्ष **1957** में प्रकाशित किया था।

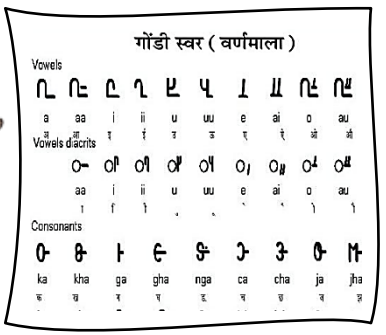

गुदना कला

→ गोंड और बैगा में गुदने बादी जाति की महिलाएँ गोदती हैं।

→ बदनिन(गुदना कलाकार) का गोंड-बैगा समाज में बड़ा सम्मान है।

→ शरीर के विभिन्न अंगों के नाम से गुदनों को पुकारा जाता है जैसे पहुचा गुदना, गोंड गुदना, बाँह गुदना, छाती गुदना आदि। गोंड पुरुष कम गुदने गुदवाते हैं।

पहेलियाँ

→ ये पहेलियों को **धंधा डालना** कहते हैं।

→ **गोचारण** के समय टोली बनाकर आदिवासी बालक धंधा का मजा लेते हैं।

→ **प्रमुख पहेलियाँ**

- ☞ जा घर में आगी बरै व घर में धुआँ। - चिलम
- ☞ इतय गई, उत्तय ताई, मसूर सो लटका गई। - ताला
- ☞ इतनी सी वितनी, काम करै कितनी । - सुई धागा
- ☞ ऊपर ताकी नीचे ताकी, कैसे के निकलो बाकी । चिरांजी (चार)

गुदना कला

- कोल महिलाएँ गुदना प्रिय हैं।
- गोदनहार - जो स्त्रियाँ गोदना लिखने का काम करती हैं।
- काजल से स्याही तैयार करती हैं।

प्रमुख लोकनृत्य

→ **कोलदहका**

- **अन्य नाम** - कोलहाई नाच, कोलदहकी आदि।
- कोलदहका का अर्थ है **कोलों का दहकना**।
- अति उत्साह, उमंग और आनंद के साथ कुशल हस्त-पद संचलन और अपनी आदिम ऊर्जा के साथ किया जाता है।
- **सगाई, विवाह, छठी** आदि उत्सव, कोलदहका, केहरा, दोतलिया और नारदी नृत्य के विशिष्ट अवसर होते हैं।

→ **केहरा**

- इसका प्रचलन **बघेलखंड** में है।
- इसकी मुख्य **ताल कहरवा** है।
- **बारी जाति** में भी प्रचलित है।
- इसमें **स्त्री और पुरुष** दोनों अलग-अलग शैली में नाचते हैं।
- फुरहरी केहरा की एक विशिष्ट मुद्रा है।
-

→ **दोतलिया और नारदी नृत्य** - कोल स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले नृत्य हैं।

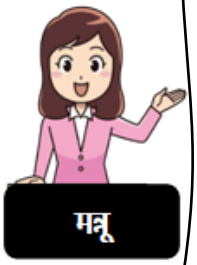

कलात्मक विवाह स्तम्भ

- यह विवाह मंडप के नीचे आँगन में विवाह स्तम्भ लगाने की परम्परा है।
- विवाह स्तम्भ को मगरोहन, मगरोही, मांगरोहन खाम, सजन, मूढ़ा, या गउरा खूँटा कहते हैं।

लोकगीत

→ कोलों की वाचिक परम्परा में **सोहर गीत, विवाह गीत, नृत्य गीत, दादर, भगत, फाग, हिंदली, कजली, टप्पा और दैवीय गीतों** का अक्षुण्ण भण्डार है।

→ **तेल बढ़ावा-पड़वा** - स्त्रियाँ, दूल्हा-दुल्हन को तेल हल्दी लगाने के अवसर पर गीत गाती हैं।

→ **पा-पछन्नी** - दूल्हा-दुल्हन के पाँव पखारने के अवसर पर गाया जाता है।

→ **गारी** - दूल्हा को कलेवा कराते समय यह गारी गीत गाती हैं।

→ **सजनई** – इसमें सवाल-जवाब होते हैं। इनका केन्द्रीय विषय श्रृंगार, प्रेम होता है।

→ **कोलहाई दादर** - जन्मोत्सव, मँगनी और विवाह के अवसर पर गाया जाता है।

आर्थिक संरचना

→ मुख्य रुप से **खेती** पर निर्भर हैं।

→ **वनोपज गोंद, चिरौंजी, महुआ और जलाऊ लकड़ी** बेचकर भी अपना जीवनयापन करते हैं।

→ **कोयले की खानों** में मजदूरी करते है।

भाषा और बोली

→ मुण्डा या कोल भाषाएँ (बोलियाँ) **प्राचीन** हैं।

→ कोल पहले **मुण्डा भाषाओं** का व्यवहार करते थे।

→ वर्तमान में कोल क्षेत्रीय बोली **बघेली** बोलते हैं।

→ **सीडू** – महुए(माहुल) की बनी शराब हैं। स्त्री एवं पुरुष दोनों का सेवन करते हैं।

जन्म संस्कार

→ प्रसव **बड़ी-बूढ़ी महिलाएँ** कराती हैं।

→ **लड़की** का नामकरण तीसरे दिन तथा **लड़के** का पाँचवें दिन होता है।

मृत्यु संस्कार

→ **अग्नि संस्कार और दफनाने** की प्रथा है।

→ **मण्डा** - मृतक की समाधि पर गाड़ा गया लकड़ी का स्तम्भ है।

→ **फुलजगनी या सिडोली गीत** - मृतक के तीसरे दिन या दसवें दिन गाया जाने वाला मृत्यु-गीत हैं।

सिडोली प्रथा/पर्व

- इस प्रथा के तहत, परिवार के सदस्यों की मौत के बाद, उनके मुंडा(मृतक स्तम्भ) बनाकर पत्थर, सागौन या सावड़ी के पेड़ की लकड़ी पर उनकी आकृति उकेरी जाती है।
- सिडोली में सम्मिलित स्त्री-पुरुष सीडू का सेवन करते हैं। नाचते-गाते हैं। शाम को सह भोज होता है।
- वृद्ध महिलाएँ मृत्यु गीत गाती हैं।
- वस्तुतः सिडोली में पूर्वजों की पूजा की जाती है। कलात्मक मण्डों बनाकर उसे स्थापित किया जाता है।

विवाह

→ **चिथोड़ा** - विवाह में मध्यस्थ व्यक्ति है।

→ **'सीडू आनी'** - विवाह पक्का होने पर दारु का निमंत्रण है।

→ कोरकुओं में **समगोत्री विवाह** निषिद्ध हैं।

→ **प्रमुख विवाह** –

- ☞ **लमसेना या घर दामाद प्रथा** - लड़का सास-श्वसुर की सेवा करता है।
- ☞ **चिथोड़ा** – चिथोड़ा की मध्यस्थता में संपन्न होता है।
- ☞ **राजी–बाजी** - युवा लड़के-लड़कियों की आपसी सहमति पर आधारित।
- ☞ **विधवा विवाह** - तलाक और विधवा विवाह प्रचलित है।

→ **अन्य प्रचलित विवाह** - गोनम, पाटो, देवर-भाभी, सहपलायन, अपहरण और आटो-साटो विवाह हैं।

धार्मिक संरचना

→ **महादेव** - महादेव इनके पितामह हैं।

→ **रावण** – ये 'होली' पर रावण की पूजा करते हैं। मान्यता है कि रावण के कहने पर ही महादेव ने इनकी सृष्टि की।

→ **मेघनाथ** - प्रत्येक गाँव में मेघनाथ की पूजा के लिए मेघनाथ खम्ब होते हैं। मेघनाथ ने इन लोगों की युद्ध में रक्षा की थी।

→ **खनेरा देव** - गाँव में बीमारी के प्रवेश को रोकते हैं।

→ **किलार-मुठवा देव** - ग्राम देवता है।

→ **खेड़ा देव** - देव खेती और मवेशी के देवता हैं।

→ **नर्मदा-ताप्ती** - माता सदृश्य मानते हैं।

→ **अन्य** - महावीर देव और सिंदरादेव कोरकुओं के अन्य पूज्य देवता हैं।

→ **जादू-टोना** - भूत-प्रेत की सम्भावना में गाँव के **पड़ियार** के पास जाते हैं।

पर्व और त्यौहार

→ **सिडोली प्रथा/पर्व** – पूर्ववत ।

→ **डोडबली** - यह लड़के-लड़कियों का प्रमुख त्योहार है।

→ **गुढ़ी पढ़वा**- नए वर्ष की खुशी में इस दिन ये कृषि से सम्बन्धित कोई भी कार्य नहीं करते।

→ **आखातीज**- वैशाख माह में मनाया जाता है।

→ **पोला**- इस दिन बैल पूजन होता है।

→ **देव दशहरा** - क्वाँर माह में मनाते हैं। इस दिन पड़ियार नृत्य करता है।

→ **दीवाली** - दीवाली पर रात्रि में कोरकू ग्वाल('ठाठया') कहते हैं ये रातभर 'भूगडू' (बांसुरी जैसा) बजाते हैं।

→ **होली**- इसमें 'सजनई-फगनई' और 'झामटा' गीत गाते है।

→ **जिरोती** - कोरकुओं का बहुत हँसी-खुशी का त्योहार है। इसमें 'डंडा नाच' होता है। किशोरियाँ जिरोती से झूला बाँधकर **डोलार गीत** गाती हैं।

→ **महुआ** के फल से बनाई गई शराब पीते हैं।

→ **ज्वार की रोटी-कढ़ी और बेसन-बाटी** विवाह आदि शुभ अवसरों पर बनाई जाती है।

वस्त्र एवं आभूषण

→ सहरिया जनजाति के पुरुष **अंगरखी या सलुका**, घुटनों तक **धोती या पछा**, कुर्ता, कमीज, साफा या खपटा, कंधे पर तौलिया, कानों में बालियाँ, गले में ताबीज और चेन तथा हाथों की कलाई में कड़ा पहनते है ।

→ सहरिया जनजाति की स्त्रियां **साड़ी या लूगड़ा**, **कब्जा**, **घागरा**, विवाहित महिलाएं **रेजा वस्त्र** पहनती है।

→ माथे पर **रखड़ी**(बोर) तथा **गुटीजेला**, नाक में लोंग, कानों में झेला (कर्णफूल), गले में खुगाली, मूंगो का हार, कुड़ला, हाथों में चूड़िया।

जन्म संस्कार

→ **लड़की** के जन्म को अति शुभ माना जाता है।

→ गर्भधारण के 7वें महीने में **बहू की गोद भराई** की रस्म की जाती है।

विवाह

→ युवक-युवतियों को अपना **साथी चुनने की स्वतंत्रता** होती है।

→ **सामूहिक नृत्य**, पर्व, हाट बाज़ार, **मड़ई युवक-युवतियों** के प्रमुख मिलन स्थल हैं।

→ **जैंसे कि** - कोटा जिले के **'सीताबाडी'** में एक वार्षिक मेला प्रतिवर्ष **जेठमाह में दस दिन** के लिए लगता है।

झगड़ा विवाह/नाता प्रथा

- विवाहित स्त्री को भगाकर ले जाते हैं अथवा स्त्री स्वयं अपने व प्रेमी के साथ भाग जाती है दोनों को ढूँढकर पुनर्विवाह कर दिया जाता है।
- लेकिन पुराने पति को नए पति की ओर से झगड़ा देना पड़ता है।
- इसका निर्धारण पंचायत करती है।
- यह 200 से 2000 रुपये तक हो सकता है।

→ **सवर विवाह** - पंच व परिवार वाले विवाह सम्पन्न कराते हैं।

→ **सगाई विवाह**- दोनों पक्षों की राजी-बाजी से पहले सगाई की रस्म की जाती है।

→ **झार-फेरा विवाह** - संबंध तय होने के बाद अन्यत्र संबंध तय करने से पूर्व लड़की अपहरण कर फेरा करवा देते हैं।

बिंझवार जनजाति

→ बिंझवार जनजाति प्रमुख रूप से **छत्तीसगढ़** में निवास करती है, लेकिन म.प्र. के **बालाघाट और मण्डला, डिण्डोरी** जिलों में भी यह पायी जाती है ।

→ बिंझवार मूलतः **द्रविड़ परिवार** के हैं ।

→ बिंझवार का **उद्गम विध्याचल** पर्वत है ।

→ बिंझवार को **बिझिया** भी कहा जाता है।

→ बिंझवार अपनी उत्पत्ति बारह भाई बिंझवारों से मानते हैं।

→ बिंझवारों की **प्रमुख चार उपशाखाएँ** है- बड़े बिंझवार, सोनझरा, बड़े विरजिया, बिंझिया ।

→ बिंझवार अपने आपको तीन शाखों में सबसे उच्च मानते हैं।

→ बिंझवार के प्रमुख त्यौहारों में **पोली हरेली, नवाखानी, दशहरा, दीपावली,होली** आदि हैं ।

→ **करमा पूजा** बिंझवारों के विशिष्ट प्रकृति पूजा का पर्व है ।

→ परिवार और समाज स्वीकृति से लड़के-लड़कियों के पूर्व निर्धारित जिसे **सगाई-विवाह** कहते हैं ।

→ बिंझवारों में **लमसेना** यानी बिना विवाह के घर जंवाई रखने की प्रथा है। जिसे सेवा विवाह भी कहा जाता है ।

→ बिंझवारों में **अदला-बदली विवाह** प्रचलित है । परिवार अथवा पंचों की सहमति से भाई-बहन का विवाह दूसरे परिवार के भाई-बहन के साथ निश्चित किया जाता है। जिसे हम **आदान-प्रदान अथवा विनिमय विवाह** कह सकते हैं।

पर्व और त्यौहार

→ **रसनवा या रतौना**

- ☞ यह आदि पुरुष नंगा बैगा की स्मृति में मनाया जाता है।
- ☞ इस पर्व में मधुमक्खियों की पूजा होती हैं।
- ☞ यह मुख्यतः मण्डला में मनाया जाता है।
- ☞ इसे 'शहद पर्व' भी कहते हैं।

→ **बिदरी** - यह बीज बोने के पूर्व का त्यौहार है।

→ **नवा** - यह फसल कटाई का पर्व है।

→ **छेरता** - यह बैगा बच्चों का त्यौहार है।

धार्मिक संरचना

→ **हिन्दू देवी-देवताओं** की भी पूजा करते हैं।

→ नवरात्रि में **दुर्गा देवी** की पूजा करते हैं। **लक्ष्मी देवी** धन की देवी है।

→ **साज(साल)** इनका पूज्य वृक्ष है, इसमें **बूढ़ा देव** निवास करते हैं।

→ **शॉमन या वीर** - ऐसा व्यक्ति जो धार्मिक कार्य करता है।

→ **ठाकुर देव** - यह ग्राम व भूमि के देवता हैं तथा ग्राम के रक्षक हैं।

→ **बूढ़ा देव**- पीढ़ियों की रक्षा करने वाले।

→ **दूल्हा देव**- बीमारियों से रक्षा करने वाले।

→ **बघेश्वर देव**- यह खेती (बेवार) के देवता हैं।

→ **नारायण देव**- यह कुल देवता हैं।

→ **खैर माई**- यह ग्राम देवी हैं।

→ **बंजारिन माई**- यह वनदेवी हैं।

→ **रात्रि देवी**- यह रात में रक्षा करती हैं।

→ **जादू-टोना**

- ☞ **सूपा-तूमा पद्धति** जादू की पद्धति है।
- ☞ बैगा **गुनिया या देवार** से जादू कराते हैं।
- ☞ बैगाओं में **'गुग्गू'** विशेष मंत्र है।

प्रमुख लोकनृत्य

→ **करमा नृत्य**

- ☞ **आरंभ** - विजयादशमी से वर्षा के आरम्भ तक चलता है।
- ☞ **प्रयुक्त वाद्य** - मांदर
- ☞ **यह चार प्रकार का होता है** - करमा खरी, करमा खाप, करमा झुलनी और करमा लहकी आदि।

→ **झरपट नृत्य** - यह करमा का एक अंग है। स्त्री और पुरुष द्वारा किया जाता है।

→ **रीना नृत्य** - यह स्त्री प्रधान नृत्य है। प्रयुक्त वाद्य मांदर और टिमकी है।

→ **सैला नृत्य** – इसे युवक-युवतियाँ आदिदेव को प्रसन्न करने के लिए करते हैं।

→ **बिलमा नृत्य** - बारात विदाई के समय किया जाता है।

→ **परधौनी नृत्य**

- ☞ विवाह के अवसर पर बारात की आगवानी के स्वागत में किया जाता है।
- ☞ बैगा महिलाएँ परधौनी नृत्य करती हैं।

आर्थिक संरचना

→ धरती को अपनी माँ मानते है, इसलिए **हल नहीं** चलाते हैं।

→ ये झूम खेती करते हैं। जिसे **बेवार या पोण्डू** कहते हैं।

→ सामान्यतः **बैलों** का प्रयोग नहीं करते हैं।

पोडा प्रथा

- → सामान्यतः बैलों का प्रयोग नहीं करते हैं।
- → कुछ बैगा बैलों को उपज का आधा भाग देकर प्रयोग के लिए लेते हैं।
- → यह प्रथा पोडा कहलाती है।

→ महिलाओं के द्वारा **'गुनेरी घास'** से मालाएँ, **तर्की** नामक कान का गहना बनाया जाता हैं।

→ **महलोन** के पत्तों से दोना-पत्तल बनाते हैं।

भाषा और बोली

→ इनकी बोली पर **छत्तीसगढ़ी और गोंडी** का प्रभाव है।

→ कथाओं को **किस्सा** कहते हैं।

जन्म संस्कार

→ **सुवनाई** – प्रसव कराने वाली स्त्री है।

→ छठी पूजन के बाद महिलाएँ **जच्चा गीत** गाती हैं।

विवाह संस्कार

→ विवाह के समय **मिदुआ नृत्य** किया जाता है।

→ **समगोत्री विवाह** वर्जित होते हैं।

→ **बहुविवाह प्रथा** प्रचलित हैं।

→ **चार विवाह पद्धतियाँ प्रचलित हैं** - 1. मँगनी विवाह, 2. लमसेना विवाह, 3. राजी-बाजी विवाह, 4. विधवा विवाह।

मँगनी विवाह

- लड़के वाले लड़की के यहाँ प्रस्ताव ले-जाते है।
- लड़के वाले लड़की वालों से एक लोटा पानी माँगते हैं यदि शाम तक पानी नहीं मिला तो माना जाता है कि संबंध नहीं करना।

मृत्यु संस्कार

→ सामान्यतः मृतकों को **दफनाया** जाता है।

→ मृतक का तीसरे दिन **तीजा** किया जाता है।

→ स्मृति चिह्न के रूप में **चौतरा** बनाया जाता है।

प्रमुख लोकनृत्य और लोकगीत

→ **भड़म नृत्य**

- **प्रचलित नाम** - गुन्नू साही, भड़नी, भड़नई, भरनोटी या भंगम आदि।
- **विवाह के अवसर** पर किया जाता है।
- **प्रमुख वाद्य यंत्र** - झाँझ, ढोल, टिमकी है।

→ **सैतम नृत्य** - महिलाओं का नृत्य है। इसमें एक पुरुष बीच में ढोल बजाता है।

→ **करमा-सैला नृत्य** - करमा- सैला, सुआ की प्रथा है।

→ भारिया **अहिराई नृत्य** भी कहते हैं।

→ **प्रमुख लोकगीत** – उपजन, मंडवा, मटिया गीत, करमा, सुआ आदि।

→ **मुठवा बाबा** - संकट दूर करता है।

→ **मेघनाथ** – इसकी पूजा फाल्गुन माह में कीजाती है।

→ **भीमसेन देवता** – इनकी स्थापना चबूतरा बनाकर की जाती है।

→ **अन्य देवी** - जगतार माई, भवानी माई, नग बेड़नी माई, खेड़ापति माई, बंजारिन माई, रातमाई आदि है।

→ **जादू-टोना**

- **भुमका** - -तारक तंत्र-मंत्र का ज्ञाता होता है।
- **गुनिया** - जड़ी-बूटियों का ज्ञान रखता है।

भारिया युवा गृह को रंग-बंग कहा जाता है।

गुदना कला

- महिलाएँ विभिन्न भागों में गुदना की आकृति गुदवाती है।
- मस्तक पर भौहों के मध्य 'वड़' आकार गुदवाती है। जिसे 'चूल्हा' कहते हैं।

पर्व और त्यौहार

→ **नवाखानी**

- प्रथम फसल का त्यौहार है।
- नवाखानी त्यौहार प्रत्येक परिवार में मनाया जाता है।

→ **जवारा**

- **नवरात्रि** में मनाया जाता है।
- गेहूं के जवारों की **नौ दिन पूजा** होती है।
- इसमें **जसगीत** गाया जाता है।

→ **अन्य** - बिदरी पूजा, दीवाली और गोवर्धन पूजा ।

धार्मिक संरचना

→ **हिन्दू** देवी-देवताओं की भी पूजा करते हैं।

→ **साज(साल)** इनका पूज्य वृक्ष है।

→ मुख्य देवता **बूढ़ादेव, इंद्रदेव या बरुआ और नाग** हैं।

→ **बड़ा देव** - ग्राम देवता हैं।

आर्थिक संरचना

→ इनकी कृषि को **दहिया/ढहिया** कहा जाता था।

→ धरती को अपनी माँ मानते है, इसलिए **हल नहीं** चलाते हैं।

→ वर्तमान में **हल से खेती** करने लगी है।

→ ये वनोपज संकलन, आखेट, पशुपालन, मज़दूरी एवं लकड़हारी का कार्य भी करते हैं।

→ देवबहारी घास से बनी **पातालकोट की झाड़ू** प्रसिद्ध है।

→ ये **कोदो-कुटकी** जैसे अनाज उगाते हैं।

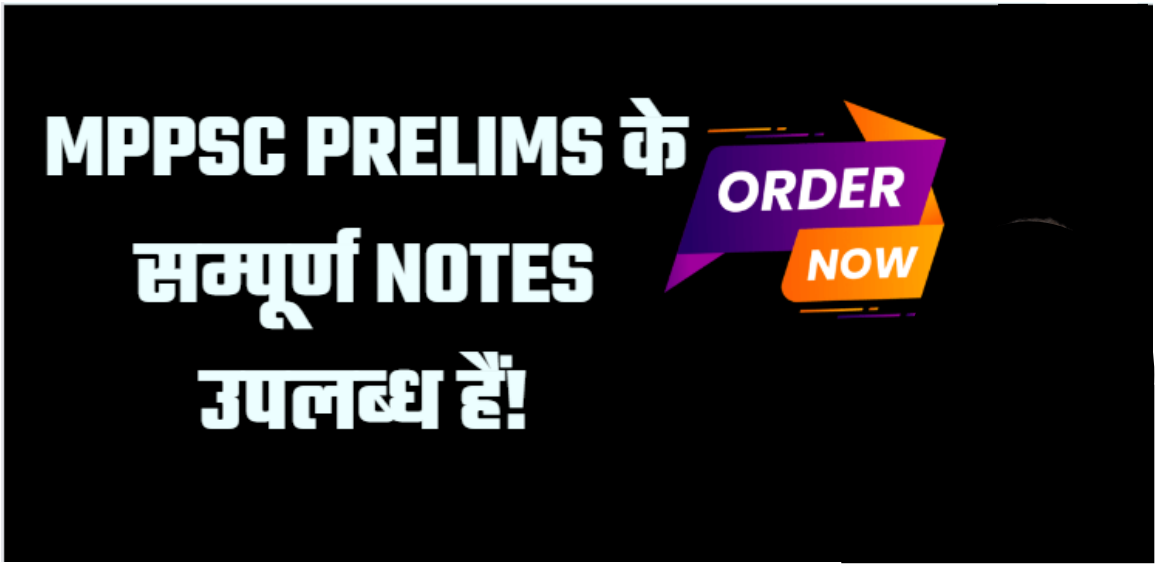

मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजाति लोकनृत्य : पुनरावलोकन

भील जनजाति के प्रमुख लोकनृत्य

→ **कहरवा** - स्त्री और पुरुष दोनों अलग अलग शैली में नाचते हैं। इसकी मुख्य ताल कहरवा ताल है ।

→ **गवरी(गौरी)** - पुरुषों के द्वारा, 'रक्षा बंधन' के अवसर किया जाता है।

→ **घूमर** - युवा लड़कियां द्वारा किया जाता है।

→ **द्विचक्की** - विवाह के अवसर पर महिला-पुरुषों द्वारा किया जाता है।

→ **नेजा** - होली के तीसरे दिन किया जाता है।

→ **गैर** - होली के अवसर पर, भील पुरुषों के द्वारा किया जाता है।

गोंड जनजाति के प्रमुख लोकनृत्य

→ **भड़ौनी** - भड़ौनी भी विवाह नृत्य है। बारात आ जाने के बाद बराती जब आंगन मे बैठते है तब महिलायें यह नृत्य करती है।

→ **सैला**- यह नृत्य आपसी प्रेम एवं भाई-चारे का प्रतीक है। 'सैला ' का अर्थ 'शैल' या 'डण्डा ' होता है। यह नृत्य दशहरे में आरम्भ होकर सम्पूर्ण शरद ऋतु की रातों तक चलता है ।

→ **करमा**- इस नृत्य को नई फ़सल आने की खुशी में लोगों द्वारा नाच-गाकर मनाया जाता है। प्रमुख नृत्य है, जो स्त्री प्रधान है।

→ **सजनी** - यह स्त्री प्रधान नृत्य है।

→ **सुआ** - धान की फसल तैयार होने पर किया जाता है।

→ **दिवनी** - यह स्त्री प्रधान नृत्य है।

→ **बिरहा** - विरह से सम्बंधित है।

→ **रीना** - यह स्त्री प्रधान नृत्य है। पैरों की ताल, करमा की तरह होती है।

→ **गोंचो** - कृषि, जन्म, और विवाह के उत्सव के रूप में किया जाता है।

कोल जनजाति के प्रमुख लोकनृत्य

→ **कोलदहका**

- **अन्य नाम** - कोलहाई नाच, कोलदहकी आदि।
- कोलदहका का अर्थ है कोलों का दहकना।
- अति उत्साह, उमंग और आनंद के साथ कुशल हस्त-पद संचलन और अपनी आदिम ऊर्जा के साथ किया जाता है।
- सगाई, विवाह, छठी आदि उत्सव, कोलदहका, केहरा, दोतलिया और नारदी नृत्य के विशिष्ट अवसर होते हैं।

→ **केहरा**

- इसका प्रचलन बघेलखंड में है।
- इसकी मुख्य ताल कहरवा है।
- बारी जाति में भी प्रचलित है।
- इसमें स्त्री और पुरुष दोनों अलग-अलग शैली में नाचते हैं।
- फुरहरी केहरा की एक विशिष्ट मुद्रा है।

→ **दोतलिया और नारदी नृत्य** - कोल स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले नृत्य हैं।

कोरकू जनजाति के प्रमुख लोकनृत्य

→ **देव-दशहरा नृत्य**

- इसमें **'पड़ियार'** नृत्य करता है।
- **'धाम और गोंगोल्या गीत'** गाये जाते हैं।

→ **चिटकोरा या थापटी नृत्य**

- चिटकोरा वाद्य के कारण इसे **चिटकोरा नाच** भी कहते हैं।
- यह **वैशाख** के महीने में किया जाने वाला **स्त्री-प्रधान समूह** नृत्य है।
- गाये जाने वाले गीतों को ' **थापटी सिरिंज**' कहते हैं।

→ **चाचरी नृत्य**

- **चैत्र** में किया जाने वाला **पुरुष प्रधान समूह** नृत्य है।

मध्य प्रदेश के जनजाति प्रमुख लोकगीत : पुनरावलोकन

भील जनजाति के प्रमुख लोकगीत

→ **सुवंटिया** - स्त्री द्वारा ।

→ **हमसीढ़ो**- स्त्री व पुरुष द्वारा।

गोंड जनजाति के प्रमुख लोकगीत

→ **पंडवानी**

- ☞ पंडवानी का अर्थ है पांडववाणी – अर्थात **पांडवकथा, महाभारत की कथा।**
- ☞ **परधान(गोंड की उपजाति) उपजाति** द्वारा किया जाता है।
- ☞ **पंडवानी, दो शैलियों में प्रस्तुत की जाती है:**
  3. वेदमती शैली (गायन)
  4. कापालिक शैली (गायन और नृत्य दोनों
- ☞ **तीजन बाई**, प्रसिद्ध पांडवानी प्रतिपादक हैं।

→ **ददरिया गीत** – विवाह गीत है।

→ **नहडोरा गीत** - विवाह गीत है।

→ **जस गीत** - इनका गायन बूढादेव के लिए किया जाता है।

→ **सेताम** – प्रेम-प्रसंग से सम्बंधित गीत है।

→ **रामायणी** - इसमें लक्ष्मण को नायक माना जाता है। लक्ष्मण को गोंड **लमसनाई** कहते हैं।

→ **गोंडवानी** – इसमें योद्धाओं की कथाएँ कही जाती है।

कोल जनजाति के प्रमुख लोकगीत

→ **तेल बढ़ावा-पड़वा** - स्त्रियाँ, दूल्हा-दुल्हन को तेल हल्दी लगाने के अवसर पर गीत गाती हैं।

→ **पा-पछन्नी** - दूल्हा-दुल्हन के पाँव पखारने के अवसर पर गाया जाता है।

→ **गारी** - दूल्हा को कलेवा कराते समय यह गारी गीत गाती हैं।

→ **सजनई** – इसमें सवाल-जवाब होते हैं। इनका केन्द्रीय विषय श्रृंगार, प्रेम होता है।

→ **कोलहाई दादर** - जन्मोत्सव, मँगनी और विवाह के अवसर पर गाया जाता है।

सहरिया जनजाति के प्रमुख लोकगीत

→ प्रमुख लोकगीत **लांगुरिया** है, जो श्रावण माह में **भुजरिया पर्व** पर गाया जाता है।

→ **अन्य -** भतैया गीत, मण्डपाच्छादन गीत, गारी, बधाई, रसिया, कन्हैया गीत, जानकी को ब्याव भेंट, निर्गुणी है।

क्षेत्र	जनजाति	जिले
उत्तर-पूर्व म.प्र.	कोल, मड़िया, अगरिया, पनिका, खैरवार	शहडोल, सीधी, जबलपुर, रीवा, सतना
दक्षिणी म.प्र.	गोड भारिया बैगा, मड़िया, हलबा	मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद
पश्चिमी म.प्र.	भील, भिलाला	खंडवा, खरगोन, झाबुआ, रतलाम, धार, अलीराजपुर
मध्य मप्र	गोंड, कोरकू	बैतूल, होशंगाबाद, जबलपुर, हरदा, नरसिंहपुर, रायसेन
उत्तर-पश्चिम म.प्र.	सहरिया, सौर	ग्वालियर, भिंड, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर

→ **मंडला** के सघन वनों में रहने वाले **बैगाओं की बोली में पुरानी छत्तीसगढ़ी का प्रभाव** है। **बालाघाट** के बैगाओं की बोली में भी **छत्तीसगढ़ी का प्रभाव** स्वाभाविक रुप से देखने को मिलता है।

2. भारिया (पाताल कोट क्षेत्र, छिन्दवाड़ा जिला)

→ भारिया जनजाति का विस्तार क्षेत्र मध्यप्रदेश के **छिंदवाड़ा, सिवनी, मण्डला और सरगुजा** जिले हैं। इस अपेक्षाकृत बड़े भाग में फैली जनजाति का एक छोटा सा समूह **छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट** नामक स्थान में सदियों से रह रहा हैं।

→ **1981 की जनगणना** में पातालकोट में भारिया को "**जंगलियों के भी जंगली**" कहा गया था।

→ **1881 से 1981** तक की शताब्दी में भारिया जनजाति के इस समूह में मामूली फर्क आया है, वह भी तब जबकि पिछले पच्चीस वर्षों से **मध्यप्रदेश सरकार ने** इस क्षेत्र की उन्नति के लिए लगातार **प्रयास** किए। यहां तक कि पूरे **पातालकोट क्षेत्र को विशेष पिछड़ा घोषित** कर दिया गया है।

→ पातालकोट की कृषि **आदिम स्थाई कृषि** है। कुल कृषि भूमि का 15 प्रतिशत खरीफ फसलों के अन्तर्गत है। प्रमुख फसलें **धान, कोदो और कुटकी** हैं। इन फसलों की **कटाई अक्टूबर तक** हो जाती है। यद्यपि **रबी यहां की फसल नहीं** है किन्तु घर के आसपास के **खाली क्षेत्र में चना** बो दिया जाता है। गेहूं भी बोया जाता है पर इसका उत्पादन नगण्य है। पातालकोट में **गेहूं और चना नगद फसलें** हैं क्योंकि इस पूरे उत्पाद को बेच दिया जाता है ताकि कुछ नकद हाथ लग सके तथा अन्य जरूरत की वस्तुएं खरीदी जा सकें।

→ कृषि के उपरान्त **खेतों में मजदूरी** करना प्रमुख कार्य है। पातालकोट के आसपास **गोंडों के खेत** फैले हुए हैं। भारिया पातालकोट से आकर इनके **खेतों में भी काम** करते हैं। **शासकीय विकास कार्यों में भी वे मजदूरी** का काम कर लेते हैं।

पातालकोट

→ पातालकोट स्थल को देखकर ही समझा जा सकता है कि यह वह स्थान है **जहां समय रुका हुआ सा प्रतीत** होता है।

→ इस क्षेत्र के निवासी **शेष दुनिया से अलग-थलग** एक ऐसा जीवन जी रहे हैं जिसमें उनकी अपनी मान्यताएं हैं, **संस्कृति और अर्थ-व्यवस्था है**, जिसमें बाहर के लोग कभी-कभार पहुंचते रहते हैं किन्तु इन्हें यहां के निवासियों से कुछ खास लेना-देना नहीं।

→ **पातालकोट का शाब्दिक अर्थ है**, पाताल को घेरने वाला पर्वत या किला।

→ यह नाम बाहरी दुनिया के लोगों ने **छिंदवाड़ा** के एक ऐसे स्थान को दिया है जिसके **चारों ओर तीव्र ढाल वाली पहाड़ियां** हैं।

→ इन वृत्ताकार पहाड़ियों ने मानों सचमुच ही **एक दुर्ग का रुप** रख लिया है। इस अगम्य स्थल में विरले लोग ही जाते हैं।

→ ऐसा नहीं है कि इस क्षेत्र में एक ही जनजाति रहती है। वरन सच तो यह है कि पातालकोट **90 प्रतिशत आबादी भारिया जनजाति** की है, शेष **10 प्रतिशत में दूसरे आदिवासी** हैं।

→ इस स्थल की **दुर्गमता** ने ही यहां आदिवासी जीवन और संस्कृति को यथावत रखने में सहायता दी है।

- विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति से संबंधित योजनाओं का पर्यवेक्षण एवं सलाह।
- इन जातियों से संबंधित नियमों और विनियमों को बनाना और इसका क्रियान्वयन।
- ऐसी सेवाओं से सम्बद्ध सभी विषय जिनका विभाग से संबंध हो। उदाहरणार्थः- नियुक्तियां, पदस्थापनाएं, स्थानांतरण, वेतन, छुट्टी, निवृत्ति वेतन, पदोन्नति, भविष्य निधियां, प्रतिनियुक्तियां, दण्ड तथा अभ्यावेदन।

→ **जिला स्तर** - पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के जिलाधिकारियों को विभाग, का कार्य भी सौंपा गया है।

मध्यप्रदेश राज्य विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति अभिकरण

→ अभिकरण का **गठन वर्ष 1996** में किया गया है एवं इसके विनियम वर्ष **1995** के नाम से पंजीबद्ध कराये गये है।

→ अभिकरण में **01 अध्यक्ष, 06 शासकीय एवं 05 अशासकीय सदस्य** हैं।

→ **संचालक**, विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति विकास, अभिकरण के पदेन सदस्य सचिव है ।

→ **अभिकरण के उद्देश्य**

- विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों के **विकास एवं उनकी समस्याओं का पता** लगाना।
- विकास के विभिन्न क्षेत्रों में विनियोजन तथा उत्पादन के लिये जातियों के परामर्श से **आयोजनाएं तैयार** करना, ताकि उनकी **आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति** हो सके।
- इन **आयोजनाओं** को या तो **प्रत्यक्ष रुप से या समुचित अभिकरण के माध्यम से निष्पादित** करना।

विमुक्त घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों की सूची

बलदिया	जोशी बालसंतोषी, जोषी बहुलीकर, जोशी बजारिया, जोषी बुदुबुदुकी, जोषी चित्राबठी, जोशी हरदा, जोशी नादिया, जोशी हरबोला, जोशी नामदीवाला, जोशी पिंगला	लोहार पिट्टा (गाड़िया लोहार)	गोसाँई
बाछोवालिया		नायकड़ा (नायकड़ा भील)	भराडी हरदास
भाट		शिकलिगर, (बरघिया, सैगुलगोर, सरानिया, शिकलिगर	भराडी हरबोला
भन्तु		सिरंगी वाला, कुचबंद (कुचबंद)	हेजरा
देसर	काशीकापड़ी (काषीकापड़ी हरदा, काषीकापड़ी हरबोला)	सुदुगुद्, सिद्धन (बहरुपिया)	धनगर
दुर्गी मुरागी		बनीयन्थर, राजगोंड	
घिसाड़ी	कलन्दर नागफड़ा	गद्दीज़	
गोन्धली	कामद	रैभारी (पशुपालक)	
इरानी	करोला	गोलर (गोलम, गोला, बालाघाट, गोलकर)	
जोगी, जोगी कनफटा	कसाई (गडरिए)		

विमुक्त जातियां/जनजातियों की सूची

कंजर	भानमत	भाटू
सांसी	बगरी	कुचबंदिया
बंजारा	नट	बिजोरिया
बनछड़ा	पारधी	कबूतरी
मोघिया	बेदिया	सन्धिया
कालबेलिया	हाबुड़ा	पासी
चन्द्रवेदिया	बैरागी	सनोरिया

म. प्र. विमुक्त जाति दिवस 31 अगस्त को मनाया जाता है।

विमुक्त, घुमक्कड़(खानाबदोश) और अर्द्ध-घुमंतू जनजाति

- विमुक्त ऐसे समुदाय हैं जिन्हें **ब्रिटिश शासन** के दौरान वर्ष **1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम** के तहत **'जन्मजात अपराधी' के रूप में 'अधिसूचित'** किया गया था।
- इन अधिनियमों को स्वतंत्र भारत सरकार द्वारा वर्ष **1952 में निरस्त** कर दिया गया था और इन समुदायों को **'विमुक्त'** कर दिया गया था।
- इनमें से कुछ समुदाय जिन्हें विमुक्त के रूप में सूचीबद्ध किया गया था, वे भी **खानाबदोश** थे।
- **खानाबदोश और अर्द्ध-घुमंतू समुदायों**को उन लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो **हर समय एक ही स्थान पर रहने के बजाय एक स्थान से दूसरे स्थान**पर जाते हैं।
- **ऐतिहासिक** रूप से घुमंतू जनजातियों और गैर-अधिसूचित जनजातियों की कभी भी **निजी भूमि या घर के स्वामित्व तक पहुँच नहीं** थी। **for free content visit – swayammp.in**

विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों/जातियों का विवरण

घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियाँ/जातियाँ

बाछोवालिया

→ बाछोवालिया जनजाति के लोग अपनी जीविका चलाने के लिए **गाय, बैल, भैंस, गधा, कुत्ता, बंदर, भालू जैसे जानवरों** को अपने साथ लेकर फिरते हैं।

→ ये जानवरों के ज़रिए अपनी **कला का प्रदर्शन** करते हैं और **लोगों का मनोरंजन** करते हैं।

भाट

→ राजस्थान में विभिन्न **जातियों की वंशावली** लिखने वाले लोग भाट कहलाते हैं।

→ भाट **राजाओं के साथ चलते थे** जो उनकी **गाथाएं**, उनकी **कहानियां**, उनकी **प्रशंसा** किया करते थे।

देसर

→ **गुजरात** के **देसर गांव** से सम्बंधित हैं।

→ यहाँ के **90%** से ज़्यादा लोग **वंशानुगत अपराधी** हैं।

→ गांव के लोग करीब एक सदी से **अपराध की दुनिया** में हैं।

घिसाडी

→ घिसाडी जनजाति को **घिसाडी लोहार** के नाम से भी जाना जाता है।

→ घिसाडी जनजाति के लोग **भांडे, गहने, हथियार, और दूसरी धातु की चीज़ें** बनाते हैं।

गोंधली

→ मूलतः, **महाराष्ट्र** में रहने वाली एक **नृत्य कलाकार जनजाति** है।

→ यह **समुदाय देवी की पूजा** करता है।

ईरानी

→ ईरानी **खानाबदोश** जाति है।

→ ईरानी समाज के लोग **मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, राजस्थान** आदि राज्यों में बड़ी संख्या में रहते हैं।

→ ये लोग यहां-वहां भटककर अपनी जीविका चलाते हैं।

जोगी

→ जोगी शब्द संस्कृत के शब्द **'योग'** से लिया गया है।

→ **शिव पुराण** में इस जाति और इसकी उत्पत्ति का वर्णन मिलता है।

→ जोगी जाति के लोग **करतब दिखाकर और मांगकर** अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

→ यह जाति **गुरु जलंधरनाथ की अनुयायी** है।

- इसके अंतर्गत सी.**सी.रोड़, नाली, सार्वजनिक शौचालय, पेयजल व्यवस्था** आदि मूलभूत आवश्यकताओं हेतु सामुदायिक निर्माण कार्य कराये जाते है।

→ **विमुक्त जाति बस्तियों में विद्युतीकरण योजना** - विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड जनजाति के लोगों की बस्तियों में **जहां पर 100 लोगों से कम की आबादी है** एवं विद्युत व्यवस्था नहीं है, वहां विद्युत आपूर्ति की मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने हेतु **विद्युत लाईन का विस्तार, ट्रांसफार्मर लगाना, खम्बे लगाना** इत्यादि कार्य इस योजनान्तर्गत किये जाते हैं।

अन्य योजनायें

→ **नेतृत्व विकास योजना** – समुदाय के, प्रदेश के प्रत्येक जिले से **कक्षा 10वीं एवं 12वीं में सर्वाधिक अंक प्राप्त** करने वाले **बालक एवं बालिका को शिविर में आमंत्रित** किया जाकर उन्हें नेतृत्व विकास का प्रशिक्षण दिये जाने का प्रावधान है।

→ **विमुक्त जाति के समाज सेवक को उत्कृष्ट कार्य पुरस्कार योजना** - योजना अंतर्गत विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजाति के **सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिये उत्कृष्ट कार्य** करने वाले विमुक्त घुमक्कड जाति के **समाज सेवक** को राशि **रुपये 1.00 लाख का पुरस्कार दिये जाने का प्रावधान** है।

विमुक्त, घुमक्कड़ एवं अर्द्धघुमक्कड़ जनजातियों/जातियों के लिए संचालित छात्रावास/आश्रम/सामुदायिक कल्याण केन्द्र

→ **बेड़िया कन्या आश्रम(विमुक्त जाति)** – मुकरना, गुना, नीमच।

→ **बालक सामुदायिक कल्याण केन्द्र** – देवास, रतलाम, शाजापुर।

→ **बाछड़ा कन्या आश्रम** – रतलाम, नीमच।

→ **विमुक्त जाति सामुदायिक कल्याण केन्द्र** – मंदसौर, धार, राजगढ़, छतरपुर।

→ **सामुदायिक संस्कार केन्द्र** – नीमच।

→ **विमुक्त जाति बालक छात्रावास** – सीहोर, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा, अनुपपुर, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, विदिशा, राजगढ़, रायसेन, भोपाल, बुरहानपुर, खण्डवा, बड़वानी, धार, खरगौन, इन्दौर, उज्जैन, नीमच, मंद सौर, देवास, अशोकनगर, गुना, ग्वालियर, इन्दौर।

→ **विमुक्त जाति बालक आश्रम** – भिण्ड, ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, देवास, शाजापुर, नीमच, उज्जैन, इन्दौर, धार, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा, छतरपुर।

→ **विमुक्त जाति कन्या आश्रम** – ग्वालियर, शाजापुर, रतलाम, नीमच, राजगढ़, विदिशा।

→ **विमुक्त जाति कन्या छात्रावास** – भिण्ड, ग्वालियर, गुना, अशोकनगर, देवास, शाजापुर, मंदसौर, नीमच, उज्जैन, इन्दौर, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा, छतरपुर, छिन्दवाड़ा।

5 म.प्र. की जनजातियों का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

टंट्या भील

→ टंट्या भील मध्य प्रदेश की **महत्वपूर्ण आदिवासी हस्तियों** में से एक थे। उनका जन्म 1842 में **खंडवा जिले** (पश्चिमी निमाड़) के ब**रदा गांव** में हुआ था।

→ उनका मूल नाम **तांतिया भील** था। उन्हें अपने समुदाय में **टंट्या मामा** कहा जाता था।

→ उन्होंने **1857 के विद्रोह** में भाग लिया। हालाँकि, अपने मित्र गणपत राजपूत के विश्वासघात के कारण उन्हें **गिरफ्तार** कर लिया गया। उन्हें एक साल के लिए जेल भेज दिया गया।

→ वह **गुरिल्ला युद्ध** में विशेषज्ञ थे और **15 वर्षों** तक ब्रिटिश सेना की पकड़ में नहीं आये।

→ अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए **ईश्वरी प्रसाद** के नेतृत्व में एक विशेष दल का गठन किया।

→ **रक्षाबंधन** के दिन उन्हें पकड़ लिया गया और **4 दिसंबर 1889 ई. को फाँसी** पर लटका दिया गया।

→ बाद में, मध्य प्रदेश सरकार ने हर साल **4 दिसंबर को तांतिया भील बलिदान दिवस (बलिदान दिवस)** मनाने की घोषणा की।

→ उन्हें "**भारत का रॉबिनहुड**" करार दिया गया था।(

भीमा नायक

→ भीमा नायक, लोकप्रिय रुप से "**निमाड़ के रॉबिनहुड**" के रुप में जाने जाते थे।

→ उनका जन्म **1840** में **पश्चिमी निमाड़ (वर्तमान बड़वानी)** के **पंचमोहली गांव** में हुआ था।

जल भीमा-जंगल भीमा
जमीन भीमा-पहाड़ भीमा
फल भीमा-फूल भीमा
हल भीमा-हूल भीमा
गोहार भीमा-जोहार भीमा

→ **1857 में**, भीमा नायक ने **अंग्रेजों के खिलाफ हथियार** उठाए और **खाज्या नायक** के साथ **बड़वानी में विद्रोह** किया।

→ जब अंग्रेज उन्हें पकड़ने में असमर्थ रहे तो उन्होंने उनकी **मां को गिरफ्तार** कर लिया और उन्हें **मंडलेश्वर किले भेज** दिया।

→ उन्हें ब्रिटिश सेना ने **सतपुड़ा जंगल में गिरफ्तार** कर और **पोर्ट ब्लेयर जेल** भेज दिया।

→ **29 दिसंबर 1976** को पोर्ट ब्लेयर जेल में उनकी **मृत्यु** हो गई।

→ उन्होंने निमाड़ क्षेत्र में **साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह** का नेतृत्व किया।

→ उन्होंने **11 अप्रैल 1858** को **अम्बापानी की लड़ाई में भी भाग** लिया।

- आदिवासियों के शोषण और गरीबी को मिटाना।
- आदिवासियों को ऋण प्रदान करें

उद्यमी विकास संस्थान

→ **स्थापना** - 20 मार्च 1980

→ **मुख्यालय** – भोपाल

→ **उद्देश्य**

- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को व्यवसाय स्थापित करने में मदद करना।
- प्रशिक्षण, आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान करना।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय आदिवासी विश्वविद्यालय

→ **स्थापना** – 2007 **(कार्यारम्भ – 2008)** (2009 में मणिपुर में विश्वविद्यालय का प्रथम क्षेत्रीय परिसर को खोला गया।)

→ **मुख्यालय** –अमरकंटक(अनूपपुर)

→ **कार्य/महत्त्व** - विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में राजनीतिक विज्ञान और मानव अधिकार, समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान, सामाजिक कार्य, जनजातीय(gondwana community) अध्ययन और शारीरिक शिक्षा को सम्मलित किया गया है। विश्वविद्यालय 2017 से कम्प्यूटर साइंस में भी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरु कर रहा है।

मध्यप्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (MAPCET)

→ **मूल नाम** - आदिवासी तकनीकी शिक्षा मण्डल

→ **स्थापना** - वर्ष 1981

→ **भूमिका**

- जनजाति वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिये विभिन्न **तकनीकी एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में कुशलता का विकास**कर उनके रोजगार/ स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु स्थापित है।
- तत्पश्चात् वर्ष **1989** में संस्था के कार्यक्षेत्र में वृद्धि कर अनुसूचित जाति वर्ग के लिये **तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों** के आयोजन को भी शामिल किया गया।
- वर्ष **2008 से मेपसेट** के उद्देश्यों में वृद्धि करते हुए **पिछड़ा वर्ग के शिक्षित बेरोजगार उम्मीद्वारों के लिये स्वरोजगार/ रोजगार के अवसरों में वृद्धि** हेतु विभिन्न **रोजगारमूलक प्रशिक्षण कार्यक्रमों**का आयोजन किया जाना भी सम्मिलित किया गया है।

कोल जनजाति अभिकरण

→ **स्थापना** – 2012 **(वर्तमान अध्यक्ष - श्री रामलाल रौतेल)**

→ अभिकरण के कार्य का जिला-स्तर पर संचालन के लिये कोल बहुल जिलों **रीवा, सतना, सीधी, सिंगरोली, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी, जबलपुर और डिंडोरी**में आदिम-जाति कल्याण विभाग के जिला कार्यालय में कोल जनजाति विकास प्रकोष्ठ का गठन भी किया गया है।

→ कोल जनजाति मुख्य रुप से **वनोपज-संग्रहण, कृषि और मजदूरी से जीविकोपार्जन**करते हैं। सरकार द्वारा जनजातियों के विकास के लिये संचालित विभिन्न **योजनाओं का लाभ** मिलने से और औद्योगीकरण बढ़ने से कोल जनजाति का भी विकास हुआ है। अब इनके बच्चे भी उच्च शिक्षा में आगे आ रहे हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

→ इसकी स्थापना **21 मार्च 1977** को **भोपाल** में की गई थी जिसका नामकरण वर्ष **1985 में राष्ट्रीय मानव संग्रहालय** तथा **वर्ष 1993 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय** किया गया।

→ यह संग्रहालय **मानव सभ्यता के विकास की कहानी** को प्रदर्शित करने वाला देश का सबसे बड़ा संग्रहालय है।

→ **प्रागैतिहासिक वातावरण** का एहसास कराने वाली बस्ती के रुप में यह संग्रहालय स्थित है।

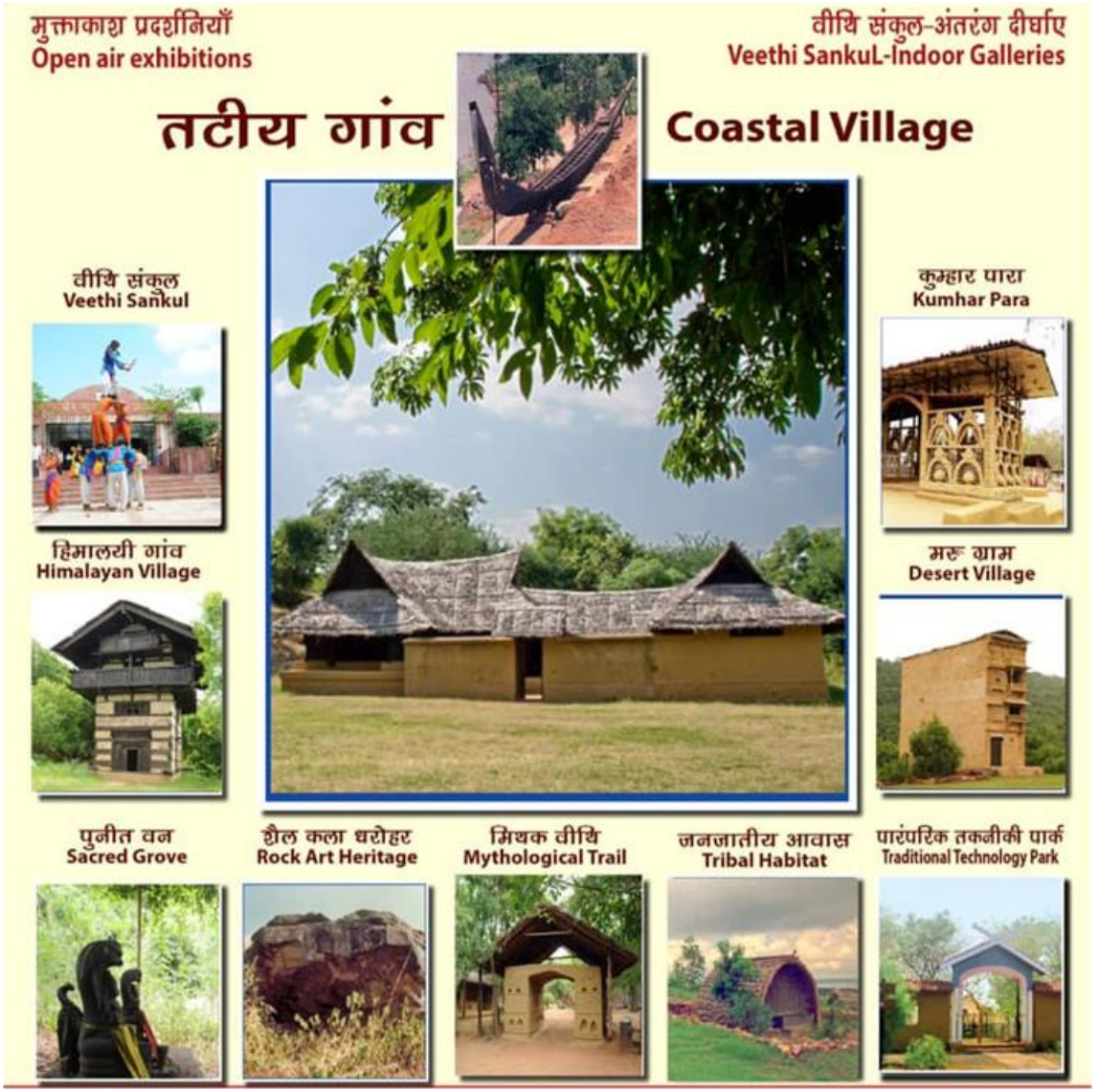

रानी दुर्गावती संग्रहालय

→ गोंड रानी दुर्गावती को समर्पित इस संग्रहालय की स्थापना **जबलपुर** जिले में वर्ष **1964** में की गई।

→ इस संग्रहालय में **चार दीर्घाएं** एवं **एक कला वीथिका** है जिनमें कुल **6163 पुरावशेष संगृहीत** हैं।

→ **दीर्घाओं में** शैव दीर्घा,वैष्णव दीर्घा, जैन दीर्घा, सूचकांक दीर्घा,उत्खनन अभिलेख दीर्घा, मुद्रा दीर्घा व आदिवासी कला दीर्घा है। इन दीर्घाओं में संग्रहालय के संग्रह की चयनित कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। कुछ प्रस्तर कलाकृतियों को संग्रहालय प्रांगण के उद्यान में मुक्ताकाश प्रदर्शित किया गया है।

→ **वीथिकाओं में** स्थानक बुद्ध, बोधिसत्व, बौद्धदेवी तारा, शहर के पास स्थित तेवर गांव, जो बौद्धधर्म का महत्वपूर्ण केंद्र था वहां से बौद्ध प्रतिमाएं संग्रहित की गई हैं। इनके साथ ही गणेश, शिव-पार्वती, शिव वीणाधर नटेश, अर्धनारीश्वर, पार्वती, हरिहर, लक्ष्मी नारायण, नृसिंह, वराह, वामन, बलराम प्रमुख हैं। जैन दीर्घा में तीर्थकर चंद्रप्रभु, अंबिका,ध्यानस्त आदिनाथ, जैन परिचारक, नवग्रह की प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं।इनके साथ ही अप्सरा-दिक्पाल दीर्घा, चौसठ योगिनी दीर्घा में भी मुगल, उत्तर मुगल, ब्रिटिश,सिंधिया के साथ ही चंदेल, कल्चुरी, नाग वंश की मुद्राएं संरक्षित हैं।

बादलभोई आदिवासी संग्रहालय

→ बादल भोई आदिवासी संग्रहालय **छिंदवाड़ा(पातालकोट)** में स्थित है।

→ इस जनजातीय संग्रहालय की **शुरुआत 20 अप्रैल 1954 ई. में** हुई थी।

→ **1975 ई. में** इस संग्रहालय को राज्य संग्रहालय का नाम दिया गया। लेकिन 8 सितम्बर 1997 ई. को इसका नाम बदल कर **बादल भोई जनजातीय संग्रहालय** रख दिया गया।

→ दरअसल, बादल भोई इस जिले के **एक क्रांतिकारी जनजातीय नेता** थे। उन्हीं के नाम पर इस संग्रहालय का नाम रखा गया।

→ इस जनजातीय संग्रहालय को **15 अगस्त 2003 में सभी पर्यटकों** के लिए खोल दिया गया।

→ संग्रहालय में इस जिले में रहने वाले जनजातीय लोगों से जुड़े संरक्षित **घरों के भण्डार** और **अनोखी वस्तुएं** देखी जा सकती हैं।

→ यहां आप **घर, कपड़े, आभूषण, शस्त्र, कृषि उपकरण, कला, संगीत, नृत्य, धार्मिक गतिविधियां** आदि चीजें देख सकते हैं।

→ इस संग्रहालय में जनजातीय समुदायों की **परम्परा और पुरानी संस्कृति की झलकियां** भी देखने को मिलती है।

म.प्र. में जनजातियों के प्रमुख प्रकाशन

वन्या प्रकाशन

→ वन्या प्रकाशन की स्थापना **25 मार्च 1980** को मध्य प्रदेश के आदिवासी कल्याण **विभाग के तहत** आदिवासी परंपरा, सांस्कृतिक भव्यता के प्रचार और संरक्षण के लिए की गई थी।

→ वन्या अपनी विभिन्न प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इसलिए वन्या देश में दूर-दूर तक फैलते हुए मध्य प्रदेश में अहम भूमिका निभा रही है।

→ वन्या **आधुनिक मुद्रण और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों** के उपयोग के माध्यम से सुदूर वन क्षेत्रों में मौजूद आदिवासी परंपराओं और संस्कृति को वर्तमान समाज के साथ जोड़ने में प्रभावी रही है।

→ इसके अलावा वन्या **आदिवासी कलाकारों** को कला की दुनिया से परिचित कराने और उनके कौशल को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए उच्चतम स्तर पर **कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों या आदिवासी चित्रकला और मूर्तियों का आयोजन** करता है। वन्या के प्रयासों का परिणाम है कि मध्य प्रदेश के विभिन्न आदिवासी कलाकारों ने देश में विभिन्न उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

→ हाल के वर्षों में वन्या प्रकाशन की प्रमुख गतिविधियों का एक सिंहावलोकन जो आदिवा**सी जीवन, परंपराओं, संस्कृति और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के उचित प्रदर्शन को बढ़ावा** देता है।

→ **श्रव्य-दृश्य प्रकाशन**

1. **'बढ़ते कदम'** - एक साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम
2. **'नए द्वार'** - साप्ताहिक टेलीविजन कार्यक्रम
3. **'आदिवासी स्वर'** - वृत्तचित्र फिल्मों की एक श्रृंखला

→ **लेखन प्रकाशन**

1. संदर्भ पुस्तकों का प्रकाशन एवं मरम्मत
2. **'समझ झरोखा'** - एक मासिक बाल पत्रिका
3. **'जन-गण कलाम'** - एक किताब
4. **'वन्या सन्दर्भ'** - एक पाक्षिक फीचर श्रृंखला
5. **'वन्या बुलेटिन'** – समाचार श्रृंखला
6. **टंट्या मामा** पर स्केच(चित्र) बुक

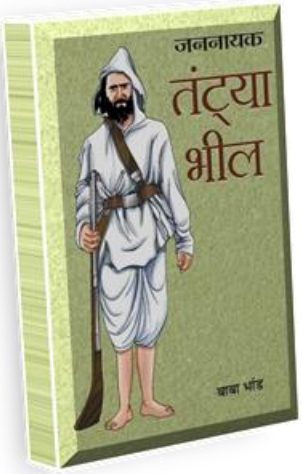

→ **श्रीराम तिवारी** वर्तमान में **वन्या के प्रबंध निदेशक** हैं। श्री श्रीराम तिवारी को साहित्य, कला, सिनेमा और भारतीय देशभक्ति मूल्यों, आदिवासी संस्कृति, इसके इतिहास और संबंधित साहित्य को बढ़ावा देने से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में उनकी विविध रुचियों के लिए जाना जाता है।

8 म. प्र. की जनजातियों के लिए योजनाएँ/कार्यक्रम

आवास सहायता योजना

→ ऐसे महाविद्यालयीन विद्यार्थियों, जिन्हें छात्रावास की सुविधा उपलब्ध नहीं कराई जा सकी है, के लिए **वर्ष 2013-14** से आवास सहायता योजना प्रारंभ की गई है।

→ **विद्यार्थियों को मध्यप्रदेश में दी जाने वाली आवास सहायता इस प्रकार है** संभागीय मुख्यालय पर 2,000 रुपये प्रतिमाह, जिला मुख्यालय पर 1,250 रुपये प्रतिमाह और विकासखंड/ तहसील मुख्यालय पर 1,000 रुपये प्रतिमाह।

छात्रवृत्ति योजनाओं में नवाचार

→ प्रदेश के अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के लिए **कक्षा 01 से पी.एच.डी. तक अध्ययनरतरहने पर प्रत्येक स्तर** पर छात्रवृत्ति योजनाएँ संचालित हैं।

→ इन योजनाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर उन्हें **सरल एवं लाभकारी** बनाया गया है।

→ **कक्षा 01 से 05 में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं**(एवं विशेष रुप से कमजोर आदिवासी समूह PVGT के बालकों को भी देय) को देय 15 रुपये प्रतिमाह के मान से 10 माह हेतु 150 रुपये की राशि को वर्ष 2017-18 से बढ़ाकर 25 रुपये प्रति विद्यार्थी प्रतिमाह अर्थात 10 माह हेतु 250 रुपये प्रति वर्ष कर दिया गया है।

→ इसी प्रकार **कक्षा 5 में अध्ययनरत बालिकाओं** की 50 रुपये प्रतिमाह की छात्रवृत्ति को बढ़ाकर 60 रुपये प्रतिमाह किया गया है। अब यह छात्रवृत्ति 10 माह हेतु 600 रुपये देय है।

→ **महाविद्यालयीन छात्रवृत्ति योजना** में शासकीय एवं शासकीय स्ववित्तपोषी संस्थाओं में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति की पात्रता के लिये आय सीमा के बंधन को वर्ष 2017-18 से समाप्त कर दिया गया है।

→ योजना में अशासकीय संस्थाओं के अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति की पात्रता हेतु **आय सीमा का बंधन वर्ष 2017-18 से 6 लाख वार्षिक** कर दिया गया है। **पहले** यह सीमा प्रतिवर्ष **अधिकतम 3 लाख** तक थी। इस निर्णय से लगभग 1 लाख 30 हजार विद्यार्थी प्रति वर्ष लाभान्वित हो रहे हैं।

→ इसी तरह वर्ष 2017-18 से ही अशासकीय संस्थाओं में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति और विश्वविद्यालय फीस विनियामक आयोग द्वारा निर्धारित शुल्क दिए जाने का प्रावधान किया गया है। पहले यह प्रावधान मात्र 7 पाठ्यक्रम तक सीमित था।

आकांक्षा योजना

→ **वर्ष 2018-19** से अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रतिष्ठित **कोचिंग संस्थाओं के माध्यम से इन्दौर, जबलपुर, भोपाल एवं ग्वालियर संभाग मुख्यालय पर कोचिंग** की यह योजना लागू की गई है।

→ प्रत्येक केन्द्र पर **इंजीनियरिंग** के लिये 200, **मेडिकल** 100 एवं **क्लेट** के 100 कुल 400 विद्यार्थियों को कक्षा **11वीं और 12वीं में अध्ययन** के साथ-साथ **आवासीय सुविधायुक्त दो वर्षीय कोचिंग** प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थाओं के माध्यम से दी जा रही है।

विशेष पिछड़ी जनजाति परिवारों को आहार अनुदान योजना

→ **योजना आरंभ की गयी** - 23 दिसंबर 2017

→ विशेष पिछड़ी जनजातियाँ **सहरिया, बैगा और भारिया के परिवार की महिला मुखिया** को **कुपोषण से मुक्ति** के लिए आहार अनुदान के रुप में प्रतिमाह **1 हजार रुपये प्रदान** किये जा रहे हैं। यह राशि सीधे उनके **खाते में जमा की जा रही है।** (DBT-Direct Benefit Transfer)

मुख्यमंत्री कौशल संवर्धन योजना एवं मुख्यमंत्री कौशल्या योजना

→ **योजना कब से प्रारंभ की गयी** – 2017-18

→ **मेपसेट(MAPCET)** के माध्यम से **PPP (Public Private Partnership) मोड** पर संचालित की जा रही है।

→ योजनांतर्गत विभिन्न ट्रेडर्स/सेक्टर्स में तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर युवक/युवतियों को रोजगार में नियोजित कराया जाता है।

→ अनुसूचित जनजाति वर्ग के **18 से 35 वर्ष आयु के शिक्षित युवाओं** को विभिन्न **रोजगारोन्मुखी व्यवसायों में नियोजित** करने अथवा उन्हें **स्वरोजगार** में स्थापित करने हेतु भारत सरकार द्वारा निर्धारित NSQF में मापदण्डों के अनुरूप प्रशिक्षित किये जाने हेतु संचालित।

प्रधान मंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना (PMAAGY)

→ भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा वित्तीय **वर्ष 2021-22 से विशेष केन्द्रीय सहायता** से प्रारम्भहै।

→ जनजातीय उप-योजना का परिवर्तित रूप है। जनजातियों के सर्वांगीण विकास हेतु **पांचवी पंचवर्षीय योजना** काल से आदिवासी उपयोजना की रणनीति अपनाई गयी, इसी रणनीति के तहत **छठी, सातवीं एवं आठवीं पंचवर्षीय योजना** काल के दौरान प्रदेश की जनजातियों के विकास के लिये योजनाबद्ध तरीके से विभिन्न विकास विभागों द्वारा योजनायें क्रियान्वित की जाती रही है।

→ **प्रधान मंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना का उद्देश्य** - सड़क , टेलीकॉम कनेक्टिविटी (मोबाइल/इंटरनेट), स्कू(ल, आंगनवाडी,स्वास्थ्य केन्द्र ,पेयजल सुविधा, ड्रेनेज एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, कौशल विकास, सामुदायिक वन विकास, वन धन योजना एवं जल संसाधनों का संरक्षण करना।

→ योजना के क्रियान्वयन हेतु **जिला स्तरीय समिति एवं राज्य स्तरीय समिति का गठन** किया गया है।

आदिवासी अनुदान प्रबंधन प्रणाली(आदिग्राम) पोर्टल

→ **अंग्रेजी में** - ADIVASI GRANTS MANAGEMENT SYSTEM (ADIGRAMS) पोर्टल

→ पोर्टल जनजातीय मामलों के मंत्रालय और राज्य **जनजातीय विकास/कल्याण विभाग** को नवीनतम योजनावार भौतिक और वित्तीय जानकारी और प्रगति तक पहुंचने, बातचीत करने और विश्लेषण करने के लिए एक केंद्रीय डेटाबेस प्रदान करेगा।

→ पोर्टल **केंद्र, राज्य, जिला, ब्लॉक और गांव स्तर पर अधिकारियों/हितधारकों** को वास्तविक समय के आधार पर प्रदर्शन तक पहुंचने, निगरानी करने और मापने और तदनुसार निर्णय लेने में सक्षम बनाएगा।

→ पोर्टल **MoTA** की विभिन्न योजनाओं के तहत प्रस्ताव प्रस्तुत करने और अनुमोदन की प्रक्रिया को भी पूरी तरह से डिजिटल बना देगा।

एम.पी.वनमित्र पोर्टल

→ **अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 तथा नियम, 2008 एवं संशोधन नियम, 2012' इस अधिनियम का सुगम कार्यान्वयन** करने के लिए **'वनमित्र' साफ्टवेयर** तैयार किया गया है।

→ इस साफ्टवेयर की सहायता से **व्यक्तिगत तथा सामुदायिक वन अधिकार दावों को ऑनलाइन प्रस्तुत** किया जायेगा।

→ दावेदार अपने दर्ज किये गए दावे की **वर्तमान** स्थिति **ऑनलाईन** प्राप्त कर सकेगा। 'वनमित्र' के उपयोग के लिए **लॉग इन** करें।

→ **एम.पी.वनमित्र की कार्यप्रणाली**

1 ग्राम सभा द्वारा ग्राम वन अधिकार समिति का गठन अथवा पुनर्गठन तथा सामुदायिक संसाधनों की पुष्टि करना।

2 गठित / पुनर्गठित ग्राम वन अधिकार समिति का ग्राम पंचायत सचिव द्वारा 'एम. पी. वनमित्र' पोर्टल में पंजीयन।

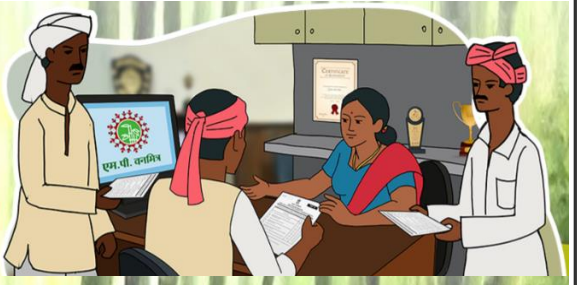

3 दावेदार द्वारा कियोस्क सेंटर से एम.पी. वनमित्र पोर्टल में नि:शुल्क ऑनलाइन आवेदन।

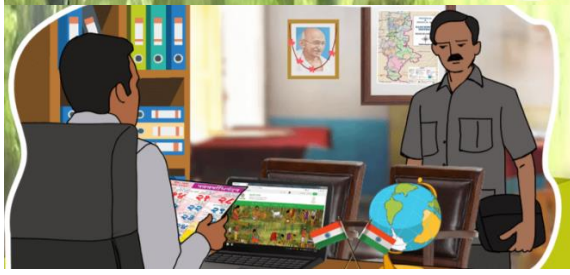

4 ग्राम वन अधिकार समिति द्वारा पंजीकृत दावों के स्थल सत्यापन हेतु तिथि निर्धारण कर संबंधितों को सूचित करना।

5

ग्राम वन अधिकार समिति द्वारा निर्धारित तिथि को दावे की भूमि का भौतिक सत्यापन कर, 'एम.पी. वनमित्र सर्वे' मोबाईल एप द्वारा नक्शा बनाना और आवेदन तथा साक्ष्यों का सत्यापन करना।

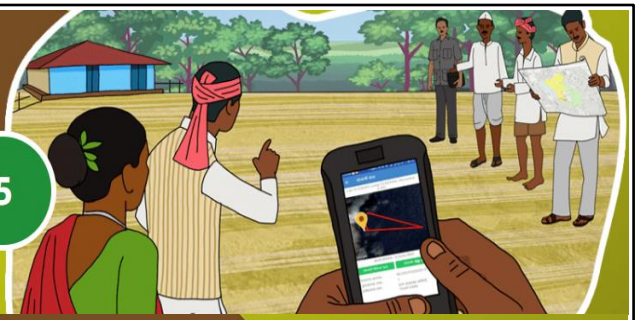

6

ग्राम वन अधिकार समिति द्वारा सत्यापन का निष्कर्ष ग्राम सभा में प्रस्तुत करना।

7

ग्राम सभा आयोजित कर सत्यापित सामुदायिक तथा व्यक्तिगत वन अधिकार दावों के संबंध में ग्राम सभा का संकल्प पारित करना।

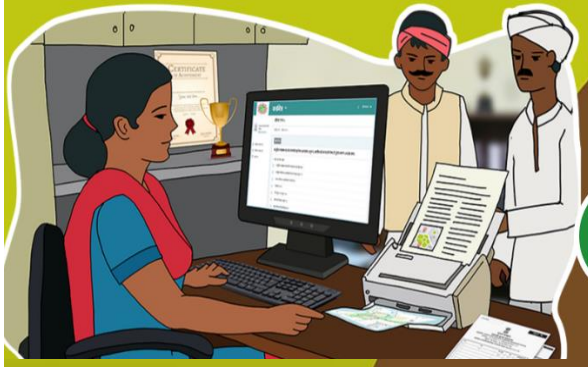

8

ग्राम वन अधिकार समिति द्वारा ग्राम सभा के संकल्प, कार्यवाही विवरण, फोटो, उपस्थिति पत्रक को एम.पी. वनमित्र पोर्टल में अपलोड करना तथा दावों को उपखण्ड स्तरीय समिति को भेजना।

9

उपखण्ड स्तरीय वन अधिकार समिति द्वारा बैठक करके ग्राम वन अधिकार समिति से प्राप्त दावों से संबंधित अनुशंसाएँ दर्ज कर जिला स्तरीय वन अधिकार समिति को भेजना।

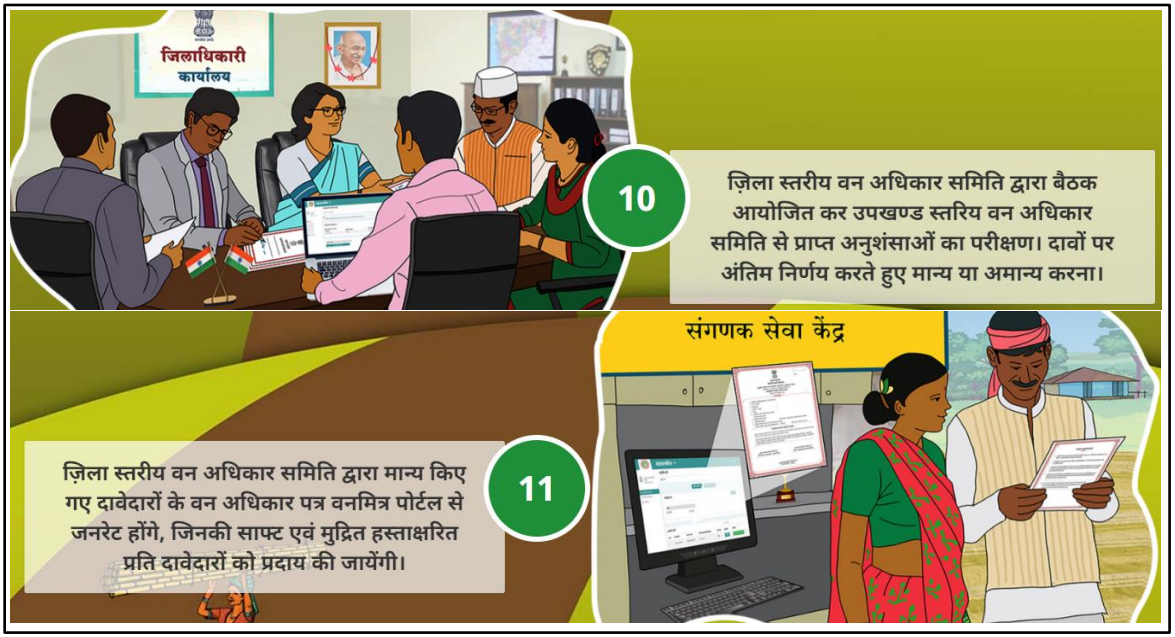
जिलाधिकारी कार्यालय
10
ज़िला स्तरीय वन अधिकार समिति द्वारा बैठक आयोजित कर उपखण्ड स्तरिय वन अधिकार समिति से प्राप्त अनुशंसाओं का परीक्षण। दावों पर अंतिम निर्णय करते हुए मान्य या अमान्य करना।
संगणक सेवा केंद्र
ज़िला स्तरीय वन अधिकार समिति द्वारा मान्य किए गए दावेदारों के वन अधिकार पत्र वनमित्र पोर्टल से जनरेट होंगे, जिनकी साफ्ट एवं मुद्रित हस्ताक्षरित प्रति दावेदारों को प्रदाय की जायेंगी।
11

SPONSERD BY :- DEEPTI SINGH ACADEMY
DSA
VARG–2 MAINS ALL COURSES
819/-
हिंदी SPECIAL
819/-
गणित SPECIAL
819/-
विज्ञान SPECIAL
819/-
सामाजिक विज्ञान
BIGGEST OFFERS
CONTACT NOW
9522237038
8319765162

9 मध्य प्रदेश का सांस्कृतिक परिदृश्य

मध्यप्रदेश के लोक नृत्य

निमाड़ क्षेत्र के लोक नृत्य

गणगौर नृत्य

→ यह नृत्य मुख्य रुप से गणगौर उत्सव के **नौ दिनों** के दौरान किया जाता है।

→ यह **निमाड़** क्षेत्र में गणगौर के अवसर पर **देवता राणुबाई** और **धनियार सूर्यदेव** के सम्मान में की जाने वाली भक्ति का एक रुप है।

→ **नृत्य दो प्रकार के होते हैं** - झालरिया और झेला नृत्य ।

काठी नृत्य

→ यह पार्वती की तपस्या से संबंधित **मातृ पूजा** का नृत्य है।

→ **मुख्य वाद्ययंत्र** - ढाक।

→ **बाना** नामक वेशभूषा (नर्तकों की वेशभूषा नेपाल के महाकाली नृत्य के समान होती है।)

→ **काठी देव प्रबोधिनी एकादशी**से शुरु होकर **महाशिवरात्रि** पर समाप्त होती है।

→ इस्तेमाल किए गए उपकरण को **फेफ्रिया** भी कहा जाता है।

फेफारिया नृत्य

→ फेफारिया नृत्य **विवाह** के अवसर पर किया जाता है।

माडल्या नृत्य

→ मांडल्या नृत्य **ढोल** पर किया जाता है।

→ यह नृत्य केवल **महिलाओं** द्वारा किया जाता है।

आड़ा खड़ा नृत्य

→ निमाड़ क्षेत्र में **जन्म, मुडन व विवाह के अवसर** पर प्रदर्शित किया जाता है।

→ मुख्य वाद्ययंत्र **ढोल** है।

डंडा नृत्य

→ हिंदी महीने के **चैत्र वैशाख** में प्रदर्शित किया जाता है।

→ **गणगौर पर्व** के अवसर पर।

→ यह एक **पुरुष नृत्य** है।

→ **प्रमुख वाद्ययंत्र** - ढोल और थाली।

मालवा क्षेत्र के लोक नृत्य

मटकी नृत्य

→ **सगाई विवाह** के अवसर पर मालवा गाँव की महिलाएं मटकी नृत्य करती है।

→ प्रारंभ में यह **एकल महिला नृत्य** था जिसे झेला कहा जाता है।

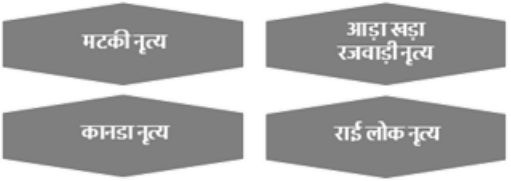

मध्यप्रदेश के नाटक

निमाड़ के लोक नाटक

गम्मत

→ यह **व्यंग** का एक जीवत रुप है।
→ गम्मत **निमाड़** का स्थानीय लोक नाटक है।
→ यह खासकर **नवरात्रि** में हर **गाँव में पूजा के दौरान** प्रदर्शित किया जाता है।
→ गम्मत में **मृदंग** और **झाँझ** प्रमुख वाद्य यंत्र हैं।

मृदंग

भवाई

→ यह **झाबुआ** और **अलीराजपुर** जिलों में किया जाता है।
→ यह **विवाह** के अवसर पर किया जाने वाला एक लोक नृत्य है।

बघेलखंड के लोक नाटक

रासलीला

→ भादो में कृष्ण **जन्माष्टमी** के आसपास **निमाड़ गाँव** में रासलीला का आयोजन किया जाता है।
→ रासलीला में **कृष्ण लीला** के विभिन्न प्रसंग मुख्य रुप से **कृष्ण जन्म, माखन चोरी, कंस वध, हरि प्रसंग** किए जाते हैं।

रहस

→ यह केवल **मनोरंजन** ही नहीं बल्कि, **अध्यात्म** की **कलात्मक अभिव्यक्ति** भी है।
→ **श्रीमद्भगवतगीता** के आधार पर रेवारम ने रहस की पांडुलिपियाँ बनाई और उसी के आधार पर रहस का प्रदर्शन किया जाता है।

हिंगोला - **हिंगोला** एक **मंचहीन** सीधा और सरत नाट्य रुप है।

छाहुर

→ छाहुर **बघेलखंड** में कृषक जातियों का लोकनाट्य है।
→ छाहुर मुख्य रुप से **मौखिक शैली** का लोकनाट्य है।
→ इसमें पुरुष ही **स्त्री की भूमिका** निभाते हैं।

लकड़बग्घा

→ **आदिवासी युवाओं** का लोक नृत्य है ।
→ यह **शादी** के बाद प्रदर्शित किया जाता है।

मनसुखा

→ यह रास का **बघेली** संस्करण है।
→ **मनसुख** उर्फ जोकर महोदय और गोपियों में आपस में नोकझोंक हो जाता है।

जिंदवा (बहलोल)

→ शादी के **शुभ अवसर** पर जब लड़के की बारात लड़की पक्ष के घर जाती है तो यह नृत्य घर की **महिलाओं** द्वारा किया जाता है।

रामलीला

→ **बघेलखंड** में रामलीला की अनेक पारंपरिक मंडलियां है।
→ रामलीला में राम की कथा का उनकी लीला के अनुसार मंचन होता है।

बुंदेलखंड के लोक नाटक

स्वांग

→ स्वांग **बुंदेलखंड** का पारंपरिक लोक नाट्य है।
→ इसे राई नृत्य के बीच में **हास्य और व्यंग्य** के लिए किया जाता है।

बुंदेली नौटंकी

→ यह **बुंदेलखंड** क्षेत्र का सुप्रसिद्ध लोक नाट्य है।
→ किंतु इसकी यह प्राचीन शैली धीरे-धीरे **विकारग्रस्त** होने लगी है।

मालवा का लोक नाटक माच

- माच **मालवा** का पारंपरिक लोक नृत्य है।
- मध्यप्रदेश सरकार ने माच को **राजकीय लोकनाट्य** का दर्जा प्रदान किया है।
- मालवा क्षेत्र का लोकनाट्य माच **लगभग 300 वर्ष प्राचीन** है।
- इसका उद्भव राजस्थान के ख्याल से माना जाता है।
- मध्यप्रदेश के उज्जैन के अतिरिक्त **इंदौर, धार, रतलाम, मंदसौर, शाजापुर और देवास जिले** इसके मुख्य केंद्र हैं।
- माच शब्द **संस्कृत में मंच** से बना है।
- माच अधिकतर **खुले में आयोजित** किया जाता है।
- ढोलक तथा **सारंगी माच** के महत्वपूर्ण वाद्य यंत्र है।
- **बालमुकुंद** गुरु जी को माच का प्रवर्तक माना जाता है।

मध्य प्रदेश के अन्य लोक नाटक

ढोला मारु की कथा - मध्य प्रदेश में **राजस्थान** से जुड़े **सीमावर्ती क्षेत्र** में यह लोकमत प्रचलित है।

पंडवानी - यह मध्य प्रदेश के **शहडोल, अनूपपुर, बालाघाट जिले** में भी प्रदर्शित किया जाता है।

खंबस्वांग

- खूब स्वांग का अर्थ है **मेघनाथ स्तंभ** के चारों ओर किया जाने वाला नृत्य ।
- यह **कोरकू आदिवासियों** के बीच लोकप्रिय है।
- **मेघनाथ की याद** में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

मध्य प्रदेश के लोक गीत

निमाड़ क्षेत्र के लोक गीत

निर्गुणीया

- **मालवा** क्षेत्र और **निमाड़** क्षेत्र के कुछ हिस्सों में प्रदर्शन किया जाता है।
- इसमें **कबीर, मीरा, रैदास, ब्रह्मानंद, दादू व सूर** आदि भावों वाले भजन लोक में सर्वाधिक प्रचलित हैं।
- इसमें आमतौर पर **निर्गुणीया का भजन** गाते हैं वाद्य यंत्र **इकतारा और झाँझ, मृदंग** द्वारा।
- निर्गुण या गायन को **नारद भजन** भी कहा जाता है।

कलगी तुर्रा

- कलगी तुर्रा एक **प्रतिस्पर्धी लोक गायन शैली** है।
- कलगी तुर्रा चंग की **थाप पर रात भर** गाया जाता है।
- इसके दो अखाड़े है एक **कलगी अखाड़ा** है और दूसरा **तुर्रा अखाडा**, तुर्रा अखाड़े के **गुरु उस्ताद** कहलाते है।

संत सिंगाजी गीत

- संत सिंगाजी **15वीं शताब्दी के निर्गुण संत कवियों** में अग्रणी हैं।

घोटुल पाटा गीत

→ मुनिया आदिवासी क्षेत्रों में **घोटुल पाटा गीत** गाया जाता है।

→ यह गीत **मृत्यु के अवसर** पर ही गाया जाता है।

लोरिक चंदा गीत

→ लोरिक चंदा गीत **उत्तर भारत के क्षेत्र** में गाया जाता है।

→ यह **शाम के समय** में गाया जाने वाला गीत है।

→ **ऊच्च स्वरों** वाली गाथा आत्म गायन शैली इसकी प्रमुख पहचान है।

ददरिया गीत

→ यह गीत **बैगा आदिवासी क्षेत्रों** में गाया जाता है।

→ यह **शादी, जन्म** जैसे सभी अवसरों पर गाया जाता है।

रेलो गीत - रेलो लोकगीत मुख्य रुप से **भील, कोरकू आदिवासी जनजाति द्वा**रा गाया जाता है।

मध्य प्रदेश की लोक चित्रकला

निमाड़ क्षेत्र की लोक चित्रकारी

→ **पगल्या** - पहले बच्चे के जन्म पर शुभ संदेश का रेखांकन किया जाता है।

→ **जिरोती** - हरियाली अमावस्या पर बनाए गए भित्ति चित्र है।

→ **दशहरा** - दशहरे के दिन चित्र शैली बनाकर रावण की पूजा की जाती है।

→ **ईस्त** - विवाह में कुलदेवी के भित्ति चित्र बनाकर पूजा की जाती है।

→ **कंचाली भरना** - शादी के मौके पर दूल्हे दुल्हन के सिर पर कचाली भरी जाती है।

→ **मांडना** - विशेष रुप से दीपावली के समय त्योहारों के दौरान घर के आंगन में भूमि अलंकरण के रूप में मांडता बनाया जाता है।

मालवा क्षेत्र की लोक चित्रकारी

→ **सांजाफुली** - यह मालवा की किशोरियों का त्योहार है जो पूरे श्राद्ध पक्ष में मनाया जाता है। गोवर के फूल या चमकदार पत्तियों से सजा की अलग-अलग पारंपरिक आकृतियों बनाते हैं।

→ **चित्रावण** - चित्र वर्णन में चमकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। यह विवाह के समय घर के मुख्य द्वार पर बना चित्र।

बघेलखंड क्षेत्र की लोक चित्रकारी

→ **नेऊरा नर्मे** - भादो महीने की नवमी पर **विवाहित महिलाओं** द्वारा पारंपरिक भित्ति चित्र की पूजा की जाती है।

→ **छठी चित्र** - बच्चे के जन्म के **छठे दिन गेरु से छठी माता** का चित्र बनाया।

→ **तिलंगा** - **कोयले में तिल्ली** के तेल को मिलाकर **तिलगा** का **भित्ति चित्र।**

→ **कोहवर** वैवाहिक **अनुष्ठान भित्ति चित्रों** को कोहबर कहा जाता है।

→ **नाग भित्ति चित्र** - ये भित्ति चित्र **नाग पंचमी के अवसर** पर दीवारों पर गेरु से नाग का चित्र बनाकर बनाए जाते हैं।

→ **बारायन/अगरोहन** - मंडप में विवाह के अवसर पर दुल्हनों का **श्रृंगार** किया जाता है। दीवारों पर मोर **भित्ति चित्र** बनाये जाते है।

भदावरी

→ भदावरी **ग्वालियर और चंबल संभाग** के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

→ **राजस्थानी, ब्रज और बुंदेली** के मेल से बनी है।

ब्रजभाषा

→ ब्रजभाषा **खड़ी हिंदी की एक बोली** है जो मुख्य रुप से **भिंड, मुरेना, ग्वालियर** में बोली जाती है।

→ इस बोली में **सूरदास, मीरा, रसखान** जैसे कवियों ने बड़े पैमाने पर साहित्य की रचना की है।

जनजातीय बोलियां

→ **भीली** - यह बोली राज्य के रतलाम, धार, झाबुआ, खरगोन और अलीराजपुर जिलों में रहने वाली भील जनजातियों द्वारा बोली जाती है।

→ **गोंडी** - गोंडी बोली छिदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट में रहने वाली गोंड जनजातियों द्वारा बोली जाती है। राज्य के मंडला, डिंडोरी और होशंगाबाद जिलों में।

→ **कोरकू** - यह बोली बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, खरगोन जिलों के कोरकू आदिवासियों द्वारा बोली जाती है।

10 मध्य प्रदेश में सांस्कृतिक संस्थान अकादमियां, पुरस्कार-सम्मान और संग्रहालय

सांस्कृतिक संस्थान और अकादमियाँ

कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन

→ स्थापित वर्ष **1978** में।

→ कालिदास अकादमी **मध्य प्रदेश सरकार** द्वारा स्थापित एक सांस्कृतिक संस्था है।

→ कालिदास के **साहित्य का अध्ययन और अन्वेषण।**

उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल

→ वर्ष **1952** में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित।

→ जबकि स्थापना के समय इसका नाम **मध्य प्रदेश कला परिषद** था।

भारत भवन, भोपाल

→ एक स्वायत्त बहु **कला परिसर और संग्रहालय** है।

→ भवन के वास्तुकार **चार्ल्स कोरिया** है।

→ यह सन् **1982** में खोला गया।

मध्य प्रदेश जनजातीय लोक कला परिषद, भोपाल

→ इस परिषद की स्थापना वर्ष **1980** में हुई थी।

→ यह आदिवासी **लोक संगीत, लोक नृत्य और लोककथाओं और आदिवासी साहित्य के संरक्षण, प्रदर्शन** के लिए।

आदिवासी लोक कला एवं विकास अकादमी

→ वर्ष **1980** में स्थापित।

→ मुख्य उद्देश्य **जनजातीय कलाओं को प्रोत्साहित, संरक्षित और विकसित** करना है।

→ इसने **ओरछा में साकेत, रामायण कला संग्रहालय** भी स्थापित किया है।

ध्रुपद केन्द्र, भोपाल/ग्वालियर

→ **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शुद्ध और अति प्राचीन गायन शैली** को **ध्रुपद** के नाम से जाना जाता है।

→ इस केन्द्र में **गुरु शिष्य परम्परा** के तहत **छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति के आधार** पर ध्रुपद गायन का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है।

मध्य प्रदेश कला परिषद्, भोपाल

→ यह परिषद् सन् **1952** से अस्तित्व में आई।

→ इसका **मुख्य कार्य** राज्य में संगीत, नृत्य, ललित कला, रंगमंच आदि को बढ़ावा देना है।

मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल

→ अकादमी की स्थापना वर्ष **1984** में संस्कृत साहित्य को बढ़ावा देने और **संरक्षित** करने के उद्देश्य से की गई थी।

मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी, भोपाल

→ इसकी स्थापना **वर्ष 1987** में हुई थी।

→ इसका मुख्य उद्देश्य **तुलसी साहित्य की खोज, प्रचार और संरक्षण** करना है। इसके लिए **एकेडमी ऑफ लेक्चर सीरीज, डिस्कशन, सेमिनार आदि** का आयोजन किया जाता है।

→ **तुलसी अनुसंधान संस्थान, चित्रकूट** में कार्यरत है।

11 म.प्र. का लोक साहित्य/साहित्यकार

कालिदास

→ **कालिदास उज्जैन** के राजा विक्रमादित्य के प्रमुख नवरत्न थे।

→ उन्हें **भारत का शेक्सपियर** कहा जाता है।

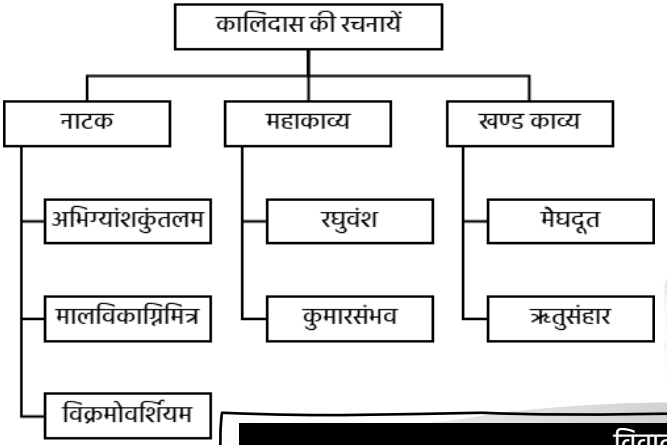

विवाद !

→ कुछ लोगों का मानना है कि कालिदास का जन्म कश्मीर में हुआ था।

→ वहीं, कुछ इतिहासकार मानते हैं कि कालिदास उज्जैन के निवासी थे।

→ उन्होंने अपने खंडकाव्य मेघदूत में उज्जैन का काफी वर्णन किया है।

→ इन्होने रचनाओं में अपने संरक्षक के रुप में किसी राजा का उल्लेख नहीं किया है।

भर्तृहरि

→ कुछ विद्वान **भर्तृहरि के काल** को **72 ईसा पूर्व** और **कुछ विद्वान 7वीं शताब्दी** मानते हैं।

→ **रचनाएँ** - श्रृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्य शतक।

→ **अन्य ग्रंथ** - वेदात सूत्र वृत्ति मीमांसा सूत्र वृत्ति, वाक्यप्रदीप वृत्ति, भागवृति, शब्द धातु समीक्षा महाभाष्य- त्रिपदी, महाभाष्य दीपिका

बाणभट्ट

→ **जन्म** - 8वीं शताब्दी/ अज्ञात

→ **हर्ष** के समकालीन थे।

→ **रचनाएँ** - हर्ष चरित्र कादंबरी

→ **अन्य रचनाएँ** - मार्कडेय पुराण के देवी महात्म्य पर आधारित दुर्गा स्त्रोत, चंडीशतक और एक नाटक पार्वती परिणय।

आचार्य केशवदास

→ प्रसिद्ध **कवि बिहारी** इनके पुत्र थे।

→ यह ओरछा नरेश राम सिंह के भाई **इंद्रजीत सिंह के दरबारी** कवि थे।

→ **रचनाएँ** - रामचंद्रिका, रसिकप्रिया, वीर सिंह चरित्र, कविप्रिय विज्ञान गीता, रतन बावनी, जहांगीर जस चंद्रिका, नखसिख, छंदमाता।

→ इनकी याद में **ओरछा में हर साल केशव जयंती समारोह** का आयोजन किया जाता है।

→ इन्हें **कठिन काव्य का प्रेत** और **हृदयहीन कवि** कहा जाता है।

जगनिक

→ **रचना** - आल्हा खंड (महुआ के आल्हा और ऊदल की वीर कथा), परमाल रासो

→ भाषा शैली **जगनिक** ने **बुंदेली भाषा** की उप बोली बनाई, जिसका उपयोग करके इन्होने **शैली में गीतात्मक काव्य** की रचना की।

माखन लाल चतुर्वेदी

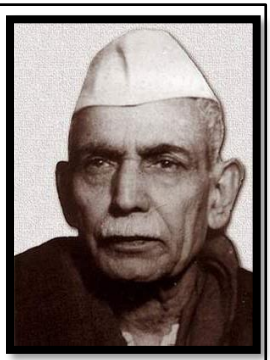

→ **जन्म स्थान**- ग्राम बाबई, जिला होशंगाबाद

→ **उपनाम** - एक भारतीय आत्मा

→ माखनलाल चतुर्वेदी को हिन्दी साहित्य में छायावादी आंदोलन के समानांतर द्विवेदी यूग का कवि माना जाता है।

→ **रचनाएँ**- पुष्प की अभिलाषा, हिम किरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, मरणज्वार, विजुरी, समर्पण बनवासी, समय के पाँव, चिन्तक की लाचारी, रंगो की बोली, पाँव पाँव के वरीद इरादे इत्यादि।

→ **सम्मान** - 1965 में उन्हें तरंगिणी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1973 में पद्म भूषण दिया गया।

→ वह प्रभा पत्रिका के संपादकीय बोर्ड के सदस्य और कर्मवीर के संपादक थे।

कवि पद्माकर

→ **जन्म स्थान** - विवादास्पद विश्वनाथ मिश्र सागर (एमपी) मानते हैं, जबकि आचार्य रामचंद्र शुक्ल बंदा (यूपी) मानते है।

→ **रचनाएँ** - पधारण, हिम्मत बहादुर, विरुदावली, प्रताप सिंह विरुदावती, जयसिंह विरुदावली. प्रमोद पचासा, राम रसायन, गंगालहरी, अलीजा प्रकाश, जगत विनोद, गंगालहरी प्रबोध पचासा तथा कालीपच्चीसी आदि है।

→ उन्होंने **वाल्मीकि रामायण की भाषा का अनुवाद** किया और राम रसायन' की रचना की।

भूषण

→ **जन्म स्थान** - टिकवा पुर ग्राम जिला कानपुर, उत्तर प्रदेश

→ **रचनाएँ** - शिवा बावनी, छत्रसाल दशक, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, शिवराज भूषण।

→ यह कई राजाओं की शरण में रहे और **चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र सेन** से इन्हें **'भूषण की उपाधि'** मिली।

घाघ

→ **रचनाएँ** - घाघ भट्टरी की कहावतें।

→ **सामग्री**- घाघ की कहावतें कृषि और मौसम के बारे में जानकारी से भरी हैं।

→ **भाषा शैली** - घाघ ने हिन्दी की खड़ी बोली का प्रयोग सूक्ति शैली में कहावतों के लिए किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

→ **पति** - ठाकुर लक्ष्मण सिंह

→ **कहानी संग्रह** - राखी की चुनीती उन्मादिनी बिखरे मोती

→ **कविताओं का संग्रह** - मुकुल, त्रिधरा, झाँसी की रानी, वीरो का कैसा हो बसंत

→ उनकी रचनाओं के लिए उन्हें दो बार सकसेरिया पुरस्कार भी मिला।

→ वे मध्य प्रदेश **विधानसभा के सदस्य** भी रही।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q. जोबट के भील किस प्रकार की दरी बनाते हैं?

A. ऊनी दरियाँ
B. प्लास्टिक दरियाँ
C. धागा दरियाँ
D. पुंजा दरियाँ

ANS – पुंजा दरियाँ

Q. 1857 के विद्रोह में राघवगढ़ में किसने विद्रोह किया था?

A. सुरेंद्र राय
B. राजा ठाकुर प्रसाद
C. झलकारी बाई
D. भीमा नायक

ANS – राजा ठाकुर प्रसाद

Q. निम्नलिखित का मिलान कीजिए-

विद्रोही	क्षेत्र
1. शेख रमज़ान	a) बड़दा
2. सआदत खान	b) मंडलेश्वर
3. भीमा नायक	c) महूँ
4. टंट्या भील	d) सागर

A. 1-a, 2-b, 3-c, 4-d
B. 1-c, 2-b, 3-d, 4-a
C. 1-d, 2-c, 3-b, 4-a
D. 1-d, 2-c, 3-a, 4-b

ANS – 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

Q. वन्या प्रकाशन की स्थापना कब की गयी थी?

A. 1988
B. 1980
C. 1960
D. 1974

ANS – 1980

Q. वन्या प्रकाशन की प्रकाशक सामग्री नहीं है?

समझ झरोखा
टंट्या मामा
वन्या बुलेटिन
D. गोंडी-हिन्दी शब्दकोश

ANS – गोंडी-हिन्दी शब्दकोश

Q. पातालकोट (छिन्दवाड़ा) में कौन-सी जनजाति रहती है?

A. गोण्ड
B. भील
C. भारिया
D. सहरिया

ANS – भारिया

Q. बेवार झूम खेती किस जनजाति में प्रचलित है?

A. बैगा
B. कमार
C. भील
D. पनिका

ANS – बैगा

Q. आदिवर्त आदिवासी और लोक कला संग्रहालय कहाँ स्थित है?

A. खजुराहो
B. पातालकोट
C. अमरकंटक
D. तामिया

ANS – खजुराहो

Q. भगोरिया नृत्य किस जनजाति में प्रचलित है?

A. भील
B. भारिया
C. सहरिया
D. पनिका

ANS – भील

Q. गोल-गधेड़ो विवाह प्रथा किस जनजाति में पाई जाती है?

A. भारिया
B. सहरिया
C. भील
D. पनिका

ANS – द्रविड़ियन

Q. बैगा जनजाति के सम्बन्ध में कौन-सा एक असत्य है?

A. बैगा एक प्रिमिटिव्ह जनजाति है.
B. बैगा गुदना प्रिय होते हैं.
C. शिकार बैगाओं का प्रिय शोक है
D. बैगा जनजाति के निवास स्थान को फाल्या कहते हैं.

ANS – बैगा जनजाति के निवास स्थान को फाल्या कहते हैं.

Q. मध्य प्रदेश के किस जिले में न्यूनतम जनजाति जनसंख्या पाई पाती है?

A. झाबुआ
B. भिण्ड
C. दतिया
D. शाजापुर

ANS – भिण्ड

Q. मध्य प्रदेश में देश की कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का कितने प्रतिशत पाया जाता है?

A. 14.5%
B. 15.6%
C. 18%
D. 12.5%

ANS – 14.5%

Q. आदिवासी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?

A. ठक्कर बापा
B. महात्मा गाँधी
C. जवाहरलाल नेहरु
D. सरदार वल्लभभाई पटेल

ANS – ठक्कर बापा

Q. लोहासुर' किस जनजाति का प्रमुख देवता है?

A. कोल
B. पनिका
C. पारधी
D. अगरिया

ANS – अगरिया

Q. पारधी जनजाति किन जिलों में निवास करती है?

A. भोपाल
B. रायसेन
C. सीहोर
D. ये सभी

ANS – ये सभी

Q. आदिवासी एवं हरिजन कल्याण विभाग(जनजातीय कार्य विभाग) की स्थापना कब की गई?

A. वर्ष 1962
B. वर्ष 1965
C. वर्ष 1971
D. वर्ष 1975

ANS – वर्ष 1965

Q. बढ़ती अनुसूचित जनजाति के क्रम में कौन-सा जिला समूह सही है?

A. भिण्ड, दतिया, मुरैना, शाजापुर
B. शाजापुर, दतिया, मुरैना, भिण्ड
C. दतिया, भिण्ड, मुरैना, शाजापुर
D. मुरैना, भिण्ड, दतिया, शाजापुर

ANS – भिण्ड, दतिया, मुरैना, शाजापुर

Q. कोल जनजाति निम्नलिखित में से किस जिला समूह में निवास करती है?

A. रीवा, सीधी, सतना
B. मण्डला, बालाघाट, बैतूल
C. झाबुआ, धार, खरगौन
D. इनमें से कोई नहीं

ANS – रीवा, सीधी, सतना

Q. दापा की प्रथा किस जनजाति के बीच प्रसिद्ध है?

A. भील
B. गोंड
C. कोरकू

D. उपर्युक्त में से कोई नहीं

ANS – भील

Q. कौन सी जनजाति सिख धर्म का अनुसरण करती है?

A. पनिका
B. अगरिया
C. बंजारा
D. उपर्युक्त में से कोई नहीं

ANS – बंजारा

Q. निम्न में किसे विश्व में प्रथम कंघी के आविष्कारक के रूप में जाना जाता है?

A. कोल
B. बंजारा
C. कोरकू
D. सहरिया

ANS – बंजारा

Q. निम्नलिखित में से कौन-सी जनजाति 'कबीरपन्थी' है?

A. बंजारा
B. पारधी
C. पनिका
D. कोल

ANS – पनिका

Q. निम्नलिखित में से किस जिले में परधान जनजाति नहीं पाई पाती है?

A. सिवनी
B. छिन्दवाड़ा
C. बैतूल
D. मुरैना

ANS – मुरैना

Q. आदिम जाति कोरकू मध्य प्रदेश में कहाँ पाई जाती है?

A. दक्षिण के जिले
B. उत्तर-पश्चिम के जिले
C. पूर्वी जिले
D. उत्तर-पूर्वी जिले

ANS – दक्षिण के जिले

Q. मध्य प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में निवासरत मुख्य जनजाति कौन-सी है

A. भील
B. कोरकू
C. बैगा
D. बंजारा

ANS – बैगा

Q. 'जंगलियों के भी जंगली' किस जनजाति को कहा जाता है?

A. बैगा
B. अबूझमाड़
C. भारिया
D. ये सभी

ANS – भारिया

Q. भारिया जनजाति के साथ किस क्षेत्र का नाम विशेष रूप से जुड़ा है?

A. पातालकोट
B. अबूझमाड़
C. बैगाचक
D. इनमें से कोई नहीं

ANS – पातालकोट

Q. मध्य प्रदेश में सहरिया जनजाति का निवास स्थान है?

A. पूर्वी मध्य प्रदेश
B. उत्तर-पश्चिमी भाग
C. दक्षिणी भाग
D. सम्पूर्ण प्रदेश
E. उत्तर-पश्चिमी भाग

Q. साल किस जनजाति का पवित्र वृक्ष है?

A. भील
B. सहरिया
C. मारिया

ANS – 1996

Q. विरसा गोंड और जिर्रा गोंड ने किस क्षेत्र में आंदोलन का नेतृत्व किया?

a) घोड़ा- डोंगरी
b) टुरिया
c) भैंसदेही
d) हँड़िया

ANS – घोड़ा- डोंगरी

Q. जंगढ़ सिंह श्याम का जन्म कहाँ हुआ था?

a) पाटनगढ़ गांव
b) नया गाँव
c) पितोई गांव
d) बरबसपुर गांव

ANS – पाटनगढ़ गांव

Q. अर्जुन सिंह धुर्वे सम्बंधित हैं?

a) पिथौरा कला
b) परधौनी नृत्य
c) ढिग्गा कला
d) गोंड पेंटिंग

ANS – परधौनी नृत्य

Q. म.प्र. के किस राजनेता ने PESA अधिनियम-1996 की रुपरेखा तैयार की थी?

A. जमुना देवी
B. फग्गन सिंह कुलस्ते
C. कांतिलाल भूरिया
D. दिलीप सिंह भूरिया

ANS – दिलीप सिंह भूरिया

Q. आदिम जातीय अनुसंधान और विकास संस्थान का मुख्यालय मूलतः कहाँ स्थित था?

A. मंडला
B. बालाघाट
C. छिंदवाड़ा
D. भोपाल

ANS – छिंदवाड़ा

Q. आदिम जातीय अनुसंधान और विकास संस्थान कब की गयी?

A. 1954
B. 1991
C. 1964
D. 1993

ANS – 1999

Q. इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय आदिवासी विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है?

A. मंडला
B. बालाघाट
C. शहडोल
D. अमरकंटक(अनूपपुर)

ANS – अमरकंटक(अनूपपुर)

Q. बादलभोई कौन थे?

A. स्वतंत्रता सेनानी
B. जनजातीय चित्रकार
C. समाज सुधारक
D. साहित्यकार

ANS – स्वतंत्रता सेनानी

Q. विशेष पिछड़ी जनजाति के युवाओं के लिए कम्प्यूटर कौशल विकास केन्द्रों की स्थापना कहाँ की गयी है.

A. छिन्दवाड़ा
B. शहडोल
C. शिवपुरी
D. उपरोक्त सभी

ANS – उपरोक्त सभी

Q. कौन-सी जनजाति दुलदुल घोड़ी नृत्य के लिए प्रसिद्ध है?

A. सहरिया
B. माड़िया
C. पारधी
D. बैगा

ANS – सहरिया

Q. टंट्या भील स्वरोजगार योजना कब आरंभ की गयी?

A. 2011
B. 2019
C. 2013
D. 2020

ANS – 2013

Q. किस जनजाति का मूल निवास कोटा(राजस्थान) और गुना(मध्यप्रदेश) तक का क्षेत्र हैं ?

A. गोंड
B. बैगा
C. सहरिया
D. भील

ANS – सहरिया

Q. रानी दुर्गावती एवं शंकरशाह पुरस्कार योजना कब आरंभ की गयी थी?

A. 2011
B. 2019
C. 2017
D. 2020

ANS – 2017

Q. प्रतिभा योजना का उद्देश्य है ?

A. उच्चा शिक्षा हेतु वित्तीय प्रोत्साहन
B. आवासीय सुविधा सहित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
C. विधार्थियों की दर्ज संख्या एवं उपस्थिति, में वृद्धि
D. निःशक्त विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रोत्साहन

ANS – उच्चा शिक्षा हेतु वित्तीय प्रोत्साहन

Q. सुदामा प्री-मेट्रिक छात्रवृत्ति योजना किस कक्षा के छात्रों के लिए है?

A. कक्षा 11वीं एवं 12 वीं
B. कक्षा 9वीं से 10वीं
C. 12वीं से स्नातक
D. कक्षा 1वीं एवं 5वीं

ANS – कक्षा 9वीं से 10वीं

Q. एम.पी.वनमित्र पोर्टल सम्बन्धित है?

A. वनाधिकार हस्तांतरण से
B. रोजगार पंजीकरण से
C. योजनओं की जागरूकता से
D. शिकायत निवारण से

ANS – वनाधिकार हस्तांतरण से

Q. मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006 का क्रियान्वयन कबसे किया जा रहा है?

A. 2011
B. 2008
C. 2006
D. 2020

ANS – 2008

Q. मध्यप्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद् (MAPCET) की स्थापना कब की गयी?

A. 1981
B. 1977
C. 1979
D. 1985

ANS – 1981

Q. बरेदी नृत्य का सम्बन्ध किस वर्ग से है?

A. किसान
B. व्यवसायी
C. छात्रगण
D. अहीर

ANS – अहीर

Q. कानडा नृत्य किस क्षेत्र से सम्बंधित है?

A. मालवा
B. छत्तीसगढ़
C. बुन्देलखण्ड

D. बघेलखण्ड

ANS – बुंदेलखंड

Q. मटकी नृत्य का प्रचलन किस क्षेत्र में है?

A. मालवा
B. छत्तीसगढ़
C. बुन्देलखण्ड
D. बघेलखण्ड

ANS – मालवा

Q. कौन-सा लोकनृत्य मध्य प्रदेश का नहीं है?

A. कर्मा
B. बीहू
C. भगोरिया
D. राई

ANS – बीहू

Q. बधाई क्या है?

A. बुन्देलखण्ड का लोकनृत्य
B. बुन्देलखण्ड का लोकगीत
C. बघेलखण्ड का लोकनृत्य
D. बघेलखण्ड का लोकगीत

ANS – बघेलखण्ड का लोकनृत्य

Q. बुन्देलखण्डी फाग गायन की विषय वस्तु क्या है?

A. देवी गीत
B. भरथरी गायन
C. कृषि सम्बन्धित गीत
D. राधा-कृष्ण

ANS – राधा-कृष्ण

Q. ढिमराई है.

A. बुन्देलखण्ड का लोकनृत्य
B. मालवा का लोकनृत्य
C. दिवाली के दूसरे दिन भोपाल में मनाया जाने वाला त्यौहार/
D. बुन्देलखण्ड का लोक संगीत

ANS – बुन्देलखण्ड का लोकनृत्य

Q. मध्य प्रदेश के खरगोन में अंग्रेजों के खिलाफ किसने विद्रोह किया?

A. तांत्या भील
B. शंकर शाह
C. शेख रमजान
D. सआदत खान

ANS – तांत्या भील

Q. ग्वालियर के समीप किस छावनी के सिपाहियों ने विद्रोह कर संचार व्यवस्था को तोड़ दिया?

A. सागर छावनी
B. महूँ छावनी
C. नीमच छावनी
D. मुरार छावनी

ANS – मुरार छावनी

Q. अप्पाजी भोंसले ने किन सैनिकों की मदद से बैतूल के पास अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी?

A. फारसी सैनिक
B. अरब सैनिक
C. डच सैनिक
D. फ्रांसीसी सैनिक

ANS – अरब सैनिक

Q. तुरिया जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?

A. गंजन सिंह कोरकू
B. दुर्गा शंकर मेहता
C. डी.पी. मिश्रा
D. लालाराम वाजपेयी

ANS – दुर्गा शंकर मेहता

Q. डॉ बी. आर. अंबेडकर का जन्म निम्न में से किस स्थान पर हुआ था?

A. भोपाल
B. महू
C. उज्जैन

Q. भील, मुख्य रूप से किस भौगोलिक क्षेत्र में पाई जाती है?

(a) मालवा

(b) बुन्देलखण्ड

(c) विंध्य

(d) सतपुड़ा

ANS – मालवा

Q. बैगा जनजाति, मुख्य रूप से किस भौगोलिक क्षेत्र में बसी हुई है?

(a) सतपुड़ा

(b) विंध्य

(c) महाकौशल

(d) निमाड़

ANS – महाकौशल

Q. सहरिया जनजाति पाई जाती है?

(a) डिंडोरी

(b) शिवपुरी

(c) बालाघाट

(d) छिन्दवाड़ा

ANS – शिवपुरी

Q. पारधी जनजाति किस वन्यजीवी क्षेत्रों में पायी जाती है?

(a) मालवा

(b) चम्बल

(c) नर्मदा

(d) सतपुड़ा

ANS – सतपुड़ा

Q. कोरकू जनजाति प्रमुखतः निवास करती हैं?

(a) विंध्य

(c) सतपुड़ा

(b) मालवा

(d) चम्बल

ANS – सतपुड़ा

Q. भिलाला जनजाति निवास करती है?

(a) चम्बल

(b) नर्मदा

(c) मालवा

(d) सतपुड़ा

ANS – नर्मदा

Q. मध्यप्रदेश में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाला जिला है-

(a) धार

(b) बड़वानी

(c) डिंडौरी

(d) मंडला

ANS – धार

Q. कौन-से जिले में निम्न जनजाति जनसंख्या है?

(a) रायसेन

(b) भिण्ड

(c) झाबुआ

(d) जबलपुर

ANS – भिण्ड

Q. आदिवासी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?

(a) ठक्कर बापा

(b) महात्मा गाँधी

(c) जवाहरलाल नेहरु

(d) सरदार वल्लभभाई पटेल

ANS – ठक्कर बापा

Q. मध्यप्रदेश में कितनी करती हैं? अधिसूचित जनजाति निवास

(a) 50 अधिसूचित जनजाति

(b) 46 अधिसूचित जनजाति

(c) 43 अधिसूचित जनजाति

(d) 40 अधिसूचित जनजाति

ANS – 46 अधिसूचित जनजाति

Q. मध्यप्रदेश के कितने जिलों में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर ऋणात्मक रही?

(a) 2

(b) 3

(c) 4

(d) 5

ANS – 3

Q. मध्यप्रदेश में कितने निवास करते हैं? प्रतिशत आदिवासी नगरों में

(a) 8.6%

(b) 6.8%

(c) 7.8%

(d) 8.9%

ANS – 6.8%

Q. मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या एसटी/एससी का कुल प्रतिशत कितना है?

(a) 26.46%

(b) 36.71%

(c) 36.35%

(d) 35.46%

ANS – 36.71%

Q. किस जिले में प्रतिशत की दृष्टि से सबसे कम जनजाति पाई जाती है?

(a) भिण्ड

(b) झाबुआ

(c) मुरैना

(d) श्योपुर

ANS – भिण्ड

Q. संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत 'अनुसूचित जनजाति' शब्द जोड़ा गया है?

(a) अनुच्छेद-342(1)

(b) अनुच्छेद-343(1)

(c) अनुच्छेद-344(1)

(d) अनुच्छेद-366 (1)

ANS – अनुच्छेद-342(1)

Q. संविधान के किस अनुच्छेद में 'अनुसूचित जनजाति' के गठन के बारे में परिभाषा दी गई है?

(a) अनुच्छेद-366(25)

(b) अनुच्छेद-366(24)

(c) अनुच्छेद-342(24)

(d) अनुच्छेद-342(25)

ANS – अनुच्छेद-366(25)

Q. राष्ट्रपति किस अनुच्छेद में आम सूचना जारी कर अनुसूचित जनजाति को सूची में वर्णित कर सकता है?

(a) अनुच्छेद-333

(b) अनुच्छेद-342

(c) अनुच्छेद-342(1)

(d) अनुच्छेद-344

ANS – अनुच्छेद-342

Q. अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम (1989) कब लागू किया गया?

(a) 30 जनवरी, 1989

(b) 30 जनवरी, 1990

(c) 30 जनवरी, 1991

(d) 30 जनवरी, 1988

ANS – 30 जनवरी, 1990

Q. सामाजिक-शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े हुए नागरिकों के किसी भी वर्ग के उत्थान के लिए (अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति) किस अनुच्छेद में उपबंध किया गया है?

(a) अनुच्छेद-15

(b) अनुच्छेद-15(1)

(c) अनुच्छेद-15(4)

(d) अनुच्छेद-15(2)

ANS – अनुच्छेद-15(4)